हिमाभक्ति प्रतापहू कोकविसकै बखानि २८ महरानी श्री राधिका सर्वेश्वरी सुजान। जन्मलीन जिन भवनमें नँदनन्दन सुख दान २९ जाहित राधा कृष्णसह तजि गोलोक बिहार। धरणि मध्य आवत भये लीन्हमनुज अवतार ३० प्रथमहिं अब वर्णनकरौं राधा आवन हेत। एक समयानिर्जन विपिनि मण्डल रास निकेत ३१ चौ०। करि विहार श्रीकृष्ण अवाधा। सोवत त्यागि दियो पुनि राधा॥ बिनपूछे बिरजा गृहगयऊ। शृङ्गारार्थ मोद मन कयऊ ३२ बिरजा शुभ राधिका समाना। वृन्दारण्य विषे सुख दाना॥ अपर सुन्दरी तासम जानी। हैंशत कोटि कृष्ण सुख दानी ३३ बिरजा रत्न सिंहासन माहीं। आवत लखत भई हरि काहीं॥ श्री हरितांहि विलोकन लयऊ। शरच्चन्द्र आनन छबि छयऊ ३४ सस्मित वक्र चक्षु मनहारी। षोड़श बर्षि युवा सबबारीं॥ शोभित शुभ रत्ना लंकारा। शुक्लवस्त्र पुलकाङ्ग निहारा. ३५ कामबाण सों पीड़ित देखी। कीन्हों कृष्ण बिहार विशेखी॥ पुष्पतल्प शोभित सुख सारा। बिरजा हरि कौतुक शृंगारा ३६ मूर्छा बिवश भई तिहि काला। करिप्राणेशवक्ष निज हाला॥ कोटि काम छबि देखि लजाई। निर्जन बन प्राणप्रिय पाई ३७ तया सक्त श्री कृष्णहि देखी। राधिकालि कह जाइ बिशेखी॥ कीन्ह क्रोध राधायह सुनिकै। रोवत अमित भई शिर धुनिकै ३८ रक्त कमल चख कहा बखानी। सत्य कहत यदि अली सयानी॥ तौ तू मोकहँ देइ दिखाई। देहुँ यथोचित फलहि लखाई ३९ बिरजहि दण्ड देउँ को राखै। क्रोध सहित राधा इमि भाखै॥ काश्चिदगोप्यसभय सुनि बैना। सम्पुटाञ्जलि कह गुण ऐना ४० कृष्ण सविरजा देहुँ दिखाई। सुनि राधा रथचढ़ि द्रुतधाई॥ तिरसठि शत करोरिगोपी गन। चलीं साथ रथचलो बेगमन ४१ रत्नसार सों रचित सुहावा। कोटि सूर्य समतेज महावा॥ इन्द्रसार मणि रचित सुहाये। तीनि कोटि कलशाळविछाये ४२ लच्चधक्रजा

में हैं राजत । मणिमय खंभ कोटि छवि छाजत ॥ मध्य देश मणि लाख सुहावा । कृत्रिम सिंह चक्र छबि पावा ४३ चारि लाख घंटा छबि छाये । चित्र पुत्तली शोभा पाये ॥ एक लक्ष रति मन्दिर सोहैं । रत्नसार निर्मित मनमोहैं ४४ मणि मय शुभग कपाट विराजत । चित्र बाजि तहँ शोभा साजत ॥ भोग द्रव्य अरु वेष समेता । रत्न पात्र मणिघट छबि देता ४५ कुंकुम मणि सोपान करोरी । कौस्तुभरुचकस्यमंत बहोरी ॥ कृत्रिम पद्म कोटि शत सोहैं । कानन वापि चित्र मनमोहैं ४६ शतयोजन सो उच्चबिशाला । दशयोजन विस्तृत छबि जाला ॥ कोटिन पुष्पन माल बिराजैं । पारिजात कुन्दादिक साजैं ४७ छं० । यूथिकदम्बहुमालति मल्लिक मांधविचंपकहू छबि छाई । पद्मसहस्रदलहूकरबीरनि नागेशहुमालासुखदाई ॥ दर्पण रत्नलक्षशतराजत चामर श्वेत सवज्रमहाई । हरि प्राणप्रिया श्रीराधाको रथ जियालाल बरणै किमिगाई ४८ चौ० । तापर चढ़ि राधाद्रुतआई । देखे द्वारपाल सुखदाई ॥ श्रीदामाहरि किंकर जोई । ठाढ़ोलक्ष गोपलै सोई ४९ कमल नयन मुख किंचिद्धासा । क्रोधित राधा बचन प्रकासा ॥ दूरजाहु रति लंपटदासा । इमत्वत्प्रभुकर लखहिं बिलासा ५० मोसमान कांतावहकैसी । देखाचहत होइ वह जैसी ॥ राधाबचन सुनत भयहीना । वेत्र पाणि तिन जानन दीना ५१ लखि राधिका सखीरुट धरिकै । दिय निकारि गोपिन बल करिकै ॥ कोलाहल गोपिनकर देखी । कोपित राधाजानि विशेखी ५२ अंतर्धान भये भगवाना । बिरजाहू चरित्र यहजाना ॥ देखि राधिका को भय पाई । त्यागेप्राण योग मनलाई ५३ सरिता रूप महा सुदधारा । प्रगटी तहां वर्त्तुलाकारा ॥ योजन कोटि तासु बिस्तारा । दशगुण दैर्घ्यरत्न अधिकारा ५४ राधाजाइ भवन मधि देखा । नहिं हरिबिरजानदी बिशेखा ॥ आई घूमि भवन निजतबहीं । हरिजाना बिरजानदि जबहीं ५५ उच्चस्वर तट रोवत भयऊ । आवहु प्रिया कहनइमि

लयऊ ॥ तव बिन मम जीवनहै नाहीं। नाहिंत प्रगट होउ सरि-
माहीं ५६ सिद्धीआठ तुमहिं हमदीनी। तिनहिं सुमिरि आवहु
सुखभीनी ॥ कृष्णाज्ञा बिरजा लहजबहीं। योषिद्वपुहरि ढिगगै
तबहीं ५७ मृदुमुसुकाइ कृष्णदिशि देखत।लखो कृष्णमम दिशि
हैं पेखत ॥ श्रोणिभार उन्नत कुच सोहै। गज गामिनि मानिनि
मनमोहै ५८ सुन्दररूप सुन्दरिनमाहीं। जिनसम धन्यअपर
तियनाहीं ॥ चम्पक वर्ण शुभग तनशोभा। पक्कबिम्ब लखि अ-
धरन लोभा ५६ दो०। कमल नयनि पूर्णेन्दुमुख मृगमद बिन्दु
सुशोभ।बिन्दु सिंदूर सुहावनो कवरी अहिनी लोभ६०रत्न भवन में
शोभई गलेरत्नकीमाल।गज मौक्तिक नासाग्र में मुक्ताहार विशा-
ल६१कंकण रत्न किंकिणी जांला।रत्न मँजीर शब्द सुख शाला॥
या बिधि रूपवती छबि देखी। आलिंगन किय कृष्ण बिशेखी६२
चूंबत बारबार मुख भयऊ। बिपरीतादि शृँगार न कृयऊ॥ बिरजा
रज अमोघ सो धारा। धारण गर्भ कीन्ह तिहिबारा ६३ दिव्य बर्ष
शतबीते जबहीं। सातपुत्र जन्मे तिन तबहीं॥ एक समय बृन्दाव-
नमाहीं। करत बिहाररहीं हरिपाहीं ६४ पीड़ित भ्रातृ पुत्रलघुआ-
यो। बिरजा क्रोड़ामध्यसमायो॥ दीन्हों त्यागि तबहिं भगवाना।
राधा गृहको कीन्हपयाना ६५ दो०। बिरजापृथुक प्रबोधकरि
नहिं समीप हरिदेख। रहअतृप्त शृंगारसों कीन्ह बिलाप बिशेख
६६ चौ०। सुतहि शशाप चारनिधि होऊ। तव जलकबहुँ न
पीवै कोऊ॥ दीन्हशाप सब पुत्रनकाहीं। जाहु मूढ़ जम्बू भूमा-
हीं ६७ नहिं एकत्र रहौ तुमकोऊ। द्वीप द्वीप महँतिष्ठितहोऊ॥
लघुसुत कह सब भाइनतेरे। सुनि सब गेमाता केनेरे ६८ अति
दुःखित प्रणाम करिमाता। गये अवनि तल विवरण गाता॥
सातौ द्वीपन सात समुद्रा। द्विगुण मान आरंभित क्षुद्रा ६६
दो०। लवण इक्षुमधुसर्पिदधि दुग्ध शुद्ध जलज़ान। सातौ
द्वीपनकेबिषे सातजलधि-एमान ७० चौ०। रोये सबबालक ति-
हिकाला। माता भ्राताशोक बिशाला॥ बिरजारोदन कियो अ-

पारा। आये कृष्ण जानि तिहि बारा ७१ कांत देखि आनँद लहभारी। लीन्हलाइ हिय कुंजविहारी॥ दीन्ह त्यागि निजपुत्रनकाहीं।ताते हरि प्रसन्न तापाहीं७२दीन्हों बर हमनित इत आवैं तव सुतनित्य दरश तवपावैं॥ यह कहि तट हरिबसत विशेखा। राधासन कह सखि जोदेखा ७३ क्रोधभवन राधागत हाला। आवतभये कृष्ण तिहि काला॥ राधाद्वार ठाढ़भेजाई। श्रीदामा सहहरिसुखदाई ७४ हरिहि बिलोकि क्रोध युतराधा। कहतभई इमि बचन अगाधा॥ मोसों अधिक बहुत हैंदारा। तहाँजाउ इत क्यों पगुधारा ७५ सरिद्रूप बिरजा अतिप्यारी। ममभय पाइ नदी बपुधारी॥ रचिमन्दिर रहिये तहँजाइय। नहिं समुद्रकररूपबनाइय ७६ नदकर नदि संगम गुणवाना। परम प्रीति निज जाति बखाना॥ कहौं कहाँ लगि अचरज बाता। जेसर्वज्ञ सर्व गतिज्ञाता ७७ नदी भोकु इच्छामनधारा। जेतुमकहँ सर्वेश बिचारा॥ कौन तत्व तिनलखी अपारा। यह कहिमौन राधिकाधारा ७८ उठी न भूमि शयन सोतहँवाँ। गोपीलक्ष बिराजतजहवाँ॥ काहूचामर हाथसुहायो। सूक्ष्मा शुक काहूछबिपायो ७९. काहूकर ताम्बूल बिराजै। कोऊ मालाकर मुदसाजै॥ कोऊ लियेसुगन्धित नीरा। कोऊ कमल पुष्पमति धीरा ८० छन्दमनहरण। काहूके सिंदूरहाथ पानहाथलीन्हे कोऊ कज्जल करदरडकोऊवेणुबीणाशोभई। रत्नअलंकारकोऊ लिये है अबीर हाथ यंत्रहाथ कोऊ लै सुगंधि तैल लोभई॥ कोऊ करतालकोऊचंडुलै मृदंग कोऊमुरलीमधुरतान गानकारि राजई। निपुण सँगीत कोऊ नृत्य परवीन कोऊ क्रीड़ा बस्तु पानि कोऊ मधुपानि साजई ८१ दो०। सुधापात्र कोऊ लिये अंघ्रिपीठ कर कोइ। वेष बस्तु लै कोउकर चरण सेवकी सोइ ८२ हाथ जोरि कोऊ खड़ी अस्तुति करती कोइ। या विधि सखी अपारहैं जियालाल कह सोइ ८३ चौ०। बाहर फाटक जौन सुहावा। कोटि सखी तहँ शोभा पावा॥ वेत्रधारि-

णी अपर सुहाई। राधा द्वार नियुक्त सदाई ८४ कृष्णहिभीतर जान न दयऊ। राधा देखि कहन इमि लयऊ॥ सन्मुख देखि प्राण पति पाये। अनुचित कर्कश बचन सुनाये ८५ हे हरि विरजा कान्तकहाये। मम समीप किहिकारण आये॥ जाहु जाहु मम सन्मुखतेरे। देत दुःखं किमि अंगनमेरे ८६ लंपट चोर लोल रति केरे। जाहु शीघ्र पद्मावतिनेरे॥ गच्छ रत्नमालाके पासा। अथवा बनमालासु बिलासा ८७ हेहे नदीकांत देवेशा। गुरुगुरुन के यह प्रभु वेशा॥ जानो भद्र होइ तब जाहू। कीजिय निकट न ममउर दाहू ८८ मनुजन को सोतव ब्यवहारा। भारतभूमि लेहु अवतारा॥ मनुज योनि जनु लंपटलीजै। जाइय धेनु लोक तजि दीजै ८९ यह कहि कहन सखिन सोंलीनर। हे शीलिशाशिकले प्रवीना॥ पद्मावति माधवि सुनि लीजै। याहि निकारि इहांते दीजै ९० जानौ याहि धूर्त मनमाहीं। याको इहां प्रयोजन नाहीं॥ या बिधि सुनि राधा के बैना। हरिसों कह गोपी करि सैना ९१ कोऊ गोपी कह समुझाई। अपर भवन वैठिय क्षण जाई॥ राधा कोप दूर जब हैहैं। तब तुमको बुलाइ हम लैहैं.९२ छन्दमनहरण। कोऊ कहै द्वितिय भवनक्षण जाहु प्रभु तुम विंन बोलि हैं अपर राधाकाहिसो। कोऊ कहे बृन्दाबन जाइयेक्षणकप्रभु राधा मानरहै जबलगि चितचाहिसो॥ कोऊ कहै हँसत बचन मानदूरिकीजै भक्तिसों मनाइ प्रेम प्रीति को निबाहि सो। कोऊ कहै जाइये अपरदारा गारमांझ लोलुप चपल परतीति चित नाहिं सो ९३ कोऊ कहै मन्दमुसुकाइ हरि सौंहँजाइ जाइये उठायमान दूरिकरि दीजिये। कोऊकटुबचन कहत हरिहेरिमुखराधा मुख कमल बिलोकिकिमि लीजिये॥ राधाकोप जबलगि दूरिनहीं होइ प्रभु तबलगि बास कहुँ अनतहि कीजिये। कोऊकहै दूजे थल जाहु यान जाहु प्रभु बारण करहिं अनतहि सुदभीजिये ९४ दो०। कोई गोपी आइकै कहे कृष्णसों बैन। मन्दिर बाहरजाइये इहाँ कामयतहै

न ९५ कृष्ण सुनत मुसुकाइकै कहत कछू नहिं बात। स्वस्थ चित्त सर्वेश प्रभु रंचक्रोध नहिंगात ९६ गोपिनकरि वारितनिरखि श्रीहरिको तिहिकाल। श्री दामाउर प्राप्तभो अमित क्रोध विकराल ९७ श्रीदामा बोलतभयो राधासों करिक्रोध। रक्त कमल चख राधिका जाउर क्रोधन बोध ९८ मम ईश्वरको कहति है कटुबाणी किमि मात। बिना बिचारे क्रोध यह मोको वृथा लखात ९९ ब्रह्मादिक के ईश प्रभु जगके कारण जौन। उमारमा वाणी प्रकृति ईश सुनिर्गुण तौन १०० पूर्णकाम आत्मा रमण करत बिड़म्बन तस्य। देविन प्रवर कहावहू सेइपाद रज यस्य १०१ प्रभुलीला भ्रूभंगसों त्वद्विधसृजें अनेक। ऐसे निर्गुण कृष्णको जाननधारि विवेक १०२ जिनके पद वैकुण्ठमें सेवत भक्तिसमेत। केशन मार्ज्जत कमलपद लक्ष्मी बुद्धिनिकेत १०३ कर्णामृत अस्तुतिनकरि स्तौति सरस्वतिजाहि। भक्ति सहित जिन ईश्वरहि तिन तू जानत नाहिं १०४ बीजरूप माया सदा रह भयभीत विशेखि। भक्ति सहित अस्तुति करत जानन तिन प्रभुलेखि १०५ नेतिनेति जिनवेदकह पावन कबहूं अंत। भामिनि तिनहिं न जानहू कृष्ण जगतके कंत १०६ चारिवक्र अज पंचमुख शंकर आनँदपाइ। अंस्तुतिपद पूजनकरत पुलकावली बढ़ाइ १०७ शेष सहसमुख सोंकरत अस्तुति आनँदपाइ। भक्ति सहित सेवत चरण बन्दत शीशनवाइ १०८ देवासुर मनु मनुजहू सेवत चरण मुनीश। स्वप्नहु पावन पगदरश तुमनलखहु सोईश १०९ छिप्ररोषको त्यागिकै गहौचरण भगवान। भृकुटि बिलाश संहारई सृष्टि सकल जियजान ११० इनकी एक निमेषमें पतन विरंचिकहोत। अष्टाविंशति इन्द्रहू इनदिन होत उदोत १११ अष्टोत्तरशतवर्ष इमि ब्रह्मा आयु प्रमान। तुमवाराधे वा अपर मम ईश्वरवश जान ११२ पूरण कटु याविधि सुनत श्रीदामाके बैन। सद्यकोप राधाकियो रक्ताम्भोरुहनैन ११३ मुक्तकेशि बाहर निकसि फरकत ओठ सक्रोध। श्रीदामासों कहन लिय

मनहुँ सिखावसु बोध ११४ रेलंपट किंकर अधम जानत अर्थन गूढ़। तेरे ईश्वर कृष्णहैं ममईश्वर नहिं मूढ़ ११५ करत बड़ाई जनक की निंदसि मातु सदाहिं। यथा असुर देवन तथा तू निन्दत मोकाहिं ११६ जाहु आसुरी योनिको तजि गोलोकहि सद्य। ममशापित रत्नन तुमहिं को ईश्वर है अद्य ११७ यह कहिकै सुष्वापपुनि राधा पुनि बिरराम। कठिन शाप आपुहि सुनत बोलतभो श्रीदाम ११८ कोप मानुषिनके सदृश तवताते भुविजाइ। मानुषि तन धारण करौ शापहमारी पाइ ११९ पत्नी तुमरापाणकी ह्वैहौ जगती जाइ। वैश्य अंशहरिहोइ सो वृन्दा-बनसुखदाइ १२० कृष्णहुतेरी शापसों लेहैं तहँअवतार। गोकुल में पैहौ तिनहिं करिहौ विपिन बिहार १२१ होवैगो विच्छेद पुनि हरिशतबर्ष प्रमान। आवहुगी गोलोक पुनि पाइकृष्णसुख दान १२२ कहि या बिधि पुनि नौमिपद जातभयो हरिअग्र। हाथ जोरि परणाम करि भाषी कथा समग्र १२३ यह कहिकै रोवत भयो कहो कृष्ण समुझाइ। जाहुधरणि ह्वैहौ अजित तीनों लोक महाइ १२४ काले शंकर शूलसों त्यागि देह ममतीर। पंचाशद्युग अंतमें इतआवहुगे बीर १२५. सुनत बचन श्री-कृष्ण के कहसशोक श्रीदाम। भक्ति तुम्हारी नहिं तजें कबहूँ ममउरधाम १२६ यह कहि श्रीहरि नौमिपद गोबाहर अस्थान। पीछे राधाहूचली पुनिपुनि रोदनठान १२७ कहां जात हेवत्सरे यह कहिकियो विलाप। श्रीदामाहू नौमिपद कीन्ह महा परि-ताप १२८ बिह्वलह्वै रोवतभयो पुनिपुनि कियो प्रणाम। शंख-चूड़ भुविजाभयो तुलसीपति सुखधाम १२९ श्रीदामा जबहीं गयो देवीहरि ढिगजाइ। सबकारण वर्णनकिया शोकाकुल दुखपाइ १३० शोकातुर अवलोकिकै बोधकियो हरितासु। शं-खचूड़ गतकाल पुनि आयो हरिढिग आसु १३१ बाराहे राधा गई धरणी कृष्ण समेत। जन्म लीनवृषभानुगृह गोकुल आनँद केत १३२ सो०॥ महाराज वृषभान की महिमा को कहिसकै।

जियालाल सुखदान रासेश्वरि जहँ जन्म लिय १३३ ॥

उग्रसेन की कथा ॥

दो०। उग्रसेन पितुकंसके नानारहे मुरारि। भक्तिभाव ऐसो कियो बशकीन्हो वनवारि १३४ पूर्णब्रह्मआनन्द घन जान हरिहि सबकाल। प्रेम निवाहत नातिसम सर्बकाल महिपाल १३५ भगवतबशयाबिधि भये निजईश्वरता त्यागि। चमर छत्र निजकरन लै कियसेवा अनुरागि १३६ ब्रह्माशिव सूरज उडुप यमजलपति अरुकाल। जामायासों भय करत चाहत कृपारसाल १३७ चौ० ॥ यामें एकबात है सारी। भक्ति विवश हैं सदामुरारी॥ कौन सुदामा धनी अपारा। काबिद्या गजराज बिचारा १३८ उग्रसेन की का प्रभुताई। कुब्जा के तन कौन निकाई॥ व्याध पुण्य कीन्ही का न्यारी। ध्रुवकी कौन वयक्रमभारी १३९ शवरीकिंहि उत्तम कुल केरी। कथा बिदुरकी जानिय फेरी॥ जियालाल किमि अहै प्रमाना। कोटिन ऐसे अंत न जाना १४०॥

कुन्ती की कथा ॥

चौ०। अबकुन्ती की कथासुहाई। बर्णनकरौं भक्त सुखदाई॥ कृष्णहि अपन भतीजा मानत। पूरणब्रह्म हिये निजजानत १४१ जब हरि चलैं बिकल अति होवैं। याबिधि बचन कहैंअरु रोवैं॥ हेहरि दीजै बिपति सदाई। जाते दरश मिलैं तुवआई १४२ जब जब हमहिं परे दुख भारे। तब तब दरशन मिले तुम्हारे॥ इमि बहुबिधि कहि कुन्ती भाखैं। जब हरिचलैं रोंकि तबराखैं १४३ परमधाम जबगे भगवाना। कुन्ती तुरत तजे सुनिप्राना॥ भगवंत निकट पहूँची जाई। जियालाल मन आँनदपाई १४४॥

युधिष्ठिर भीम नकुल सहदेव की कथा ॥

चौ०। सहद्यौनकुल युधिष्ठिरभीमा। हरिहिममेर भ्रात गुण

जीमा ॥ पूरणब्रह्म सदा उरजानत । निज ईश्वर भगवत को मानत १४५ कबहुँ नात गुणि जात भुलाई । तब भगवतपुनि देत चिताई ॥ याविधि दोनों भाव सुहाये । रहत प्रेम भगवत में लाये १४६ धरि उरभगवत भक्ति बिशोका। जिनको यश छायो त्रैलोका । घोर गरल सों भीम उबारे । लाक्षागढ़ में भे रखवारे १४७ द्रुपदसभा महँसुभट अनेका । द्रुपदसुता जीती क्षणएका॥ पांचालीलज्जारखिलीन्हा। काननमें रक्षा बहुकीन्हा १४८ पूरण राजसूयकरवाई । दुर्वासाकी शापबचाई ॥ महभारत भीष्मादिक योधा। द्रोणकर्ण बिकरण रण क्रोधा१४६ कृपाचार्य्ययुत अश्वत्थामा।शल्य जयद्रथहू रणठामा॥ सोमदत्त दुश्शान योधा। दश सहस्र गजबल किये क्रोधा १५० अष्टधातु दुर्योधन अंगा। शत भ्राता जिनके हैं संगा ॥ तिनसों बिजय दीन भगवाना।नाशकराइ दुष्टगण नाना१५१ दो० कृष्ण कृपापूरण निरखि धर्म युधिष्ठिर भूप। राज सिंहासन शोभियो शोभालही अनूप १५२ प्रजा पालियो धर्म युत भगवत भक्ति प्रकाश।शत्रु नाश कीन्हे प्रबल कीन्हे मित्र बिकाश १५३ कृष्ण गमन निजधाम सुनि तजि राज्यादिकतौन। जाइ हिमालयके बिषे कीन्हधाम हरिगौन १५४ ॥

द्रौपदी की कथा ॥

चौ० कथाद्रौपदीकी शुभएहा। बरणौंधारि रामपदनेहा॥ यज्ञ कुण्डसों प्रगटी जोई। पाण्डव बरे स्वयम्बर सोई १५५ तिनकी कथा अनेकप्रकारा। बिदित पुराणनमें बिस्तारा॥ पतिव्रतानिज पति सुखदानी। परम भक्त श्रीशारँगपानी १५६ पूरणब्रह्म कृष्णको मानत।देवर भाव बहुरि उरआनत॥ दुर्य्योधन कीन्हो अपकारा। पांडवबोले सभा मँझारा १५७ शकुनी कीन्हो कपट प्रकासा। नृपति युधिष्ठिर खेले पासा ॥ कपटअक्ष शकुनी तहँ

डारा। हारे नृपति कोश भण्डारा १५८ राज्य समस्त नृपतिगे हारी। निजसह बंधु द्रौपदीनारी॥ दुश्शासन कुरुराजपठायो। पकरिद्रौपदी कहँ सो लायो १५६ गहे केश निजसभा निहारी। दुर्योधन बोल्यो तिहिबारी॥ करहुनग्न अबद्रुपदकुमारी। बैठारहुलै जंघहमारी १६०दुश्शासन सुनिभूपति बानी। खेंचनलगो वस्त्र अज्ञानी॥ रजस्वलातन अंशुक एका। द्रौपदि देखे सुभट अनेका १६१ भीषमद्रोण द्रौणि कृपआदी। बैठ सकल परमारथबादी॥ बहुरिआपने पतिन निहारे। नीचे नैन बैठमनुमारे १६२ जबकाहू नहिं बर्जत देखा। तब हरि सुमिरण कीन्ह बिशेखा॥ हेममदेवरहे बनवारी। देखौ यहगति होतहमारी १६३ औरन हँसनचहत सब काला। अब हँसिहैं तुमकहँ लखिवाला॥ कीभावज तुम्हारि सुकुमारी। नग्न सभामहँ सकलनिहारी १६४ जैयदुनन्दन जैगिरिधारी। जैराधापति कुंजबिहारी॥ जैलाक्षागढ़पाण्डवतारण। जैजै गजपति बिपतिविदारण१६५ जैजैभीम गरल दुखनाशन। जैब्रजजन उरज्ञान प्रकाशन॥ जैजै बृन्दाबिपिन बिहारी। जैगोपीजन आनँदकारी १६६ जाक्षण द्रौपदि हरिचितलावा। ताक्षण भगवत बसन बढ़ावा॥ रंगरंगके अम्बर देखी। हरषीमन द्रौपदी बिशेखी १६७ हरिसन्मुख दोनोंकरजोरी। लागी अस्तुति करनबहोरी॥ जैगोपीपति मुरली धारण। जै निज भक्तन बिपति बिदारण १६८ छन्दमनहरण। जयति जयति अघहरण दरण दुख शरण सुखद बेद बिरदबखान्यो है। खल दलगंजन बिभंजन बिपतिगण रंजन मुनि जजनकोन जग जान्योहै॥ पूरण प्रकास ज्योति रूप सुखबास आस चरण करण निज अरणं सुआन्योहै। जियालाल सुखद दुखद जगजाल काल कठिन कराल यमजात नाहिं भान्यो है १६६ चौ०। बढ़ोबस्त्र याभाँति अपारा। जाबिधि बामनतन बिस्तारा॥ भगवत अर्पित कर्मसमाना। बाढ़तभयो दुकूलमहाना १७० दो०। कुरुक्षेत्र में जाइकै तुलादान करकोइ। सोबाढ़ै जिहिभाँति सों

बढ़ोचैल तिमिसोइ १७१ नारायणकी नाभिसों कमल नाल जिहि भाँति।बाढ़ीतिमि बाढ़त भयो अम्बर सुखकी पांति १७२ चौ०। बसन बाढ़िलखि करिअति क्रोधा। दुहुकर खैंच दुशासन योधा॥ बारिराशि जनु मथतमुरारी। गिरिमथानि वासुकि रजु धारी १७३ छन्दमनहरण। खींचत खींचत बलथाको है दुशासन को बसन घटतनहिं और सरसातहै। रंगरंग बसन बिलोकियत भलीभाँति भूरुह बसन कैधों द्रौपदीकगातहै॥ अंशुक पुतलि जनु कीन्ही है कृपानिधान जियालाल जासु अंगनेकना लखात है। बसनकरण्ड ईशकैधौं मायाजगदीश कैधोंहै समुद्रवस्त्र चैल धारभातहै १७४ दो०। याबिधि राखी लाजतहँ कृपासिन्धु भगवान। जियालाल शठ ताहि भजु छाँड़ि कपट मद मान १७५ चौ०। औरौ कथा द्रौपदी केरी। सोऊकहौं महानँददेरी॥ जब पाण्डव बनबास सिधाये। द्रौपदि सहित कठिन दुख छाये १७६ तहाँ न कछु भोजनकी सामा। मन बिचारि द्रौपदि सुखधामा।गृह पतिब्रत आनन्दितकीन्हा॥हर्षितद्युमाणि पात्र इक दीन्हा १७७ भोजन करैं न द्रौपदि जबलौं। प्रगटैं नानाब्यञ्जन तबलौं॥ एक समय दुर्वासा आये। दुर्योधन दुख देनपठाये १७८ साठिहजार शिष्य सँगलागे। भोजन आइ नृपति सों मांगे॥कह भूपति प्रभु चलिय निकेता। सुनि मुनिगे मज्जनके हेता १७९ नृपति जाइ द्रौपदि सों भाखा। पञ्चाली सुनि संशय राखा॥ हौंहूं अब भोजन करिलीन्हा। भययुत हरिको सुमिरण कीन्हा १८०. सुमिरतही तत्क्षण हरि आये। भूखे हमकहि बचन सुनाये॥ कह द्रौपदि भोजन गृह नाहीं। लैहम देहिं काह तुमकाहीं १८१ भोजन भाजन कृष्ण मँगायो। किनका एक शाकतहँ पायो॥ सो भोजन कीन्हों भगवाना। भये तृप्त त्रैलोक महाना १८२ फूल उदर दुर्वासा भागे। बोलन भीमगये सुखपागे॥ जब कतहूँ मुनिगण नहिं पाये।आइ कृष्ण सों सकल सुनाये १८३ दो०। या बिधि द्रौ-

पदि की कथा सकल सुमंगल मूल। जियालाल सुख दायिनी दारक भवभव शूल १८४ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येविंशतिसौहार्द्दमाहिमानिष्ठायांषट्भक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौद्वाविंशस्तरङ्गः २२ ॥

दो०। शरणागत महिमा अपर आत्मनिवेदन साथ। एक विंशनिष्ठाशुभग दशभक्तन की गाथ १ राम कमल पद क्षत्रहू चमर रेखको नौमि। मन्वन्तर अवतार को करौं दण्डवत सैं।मि२ चौ०। शरणागत औ आत्मनिवेदन। दोऊहैं एकै कछुभेदन। शरणागत सब मुख्य कहावै। शरणागत सों हरिहुत पावै ३ भगवत शरण होइ नरजबहीं। नाशैं कोटि जन्म अघतबहीं॥ सब बिधि रक्षाकरहिं मुरारी। जिमि शिशुको राखै महतारी ४ शरणागत की अमित बड़ाई। जियालाल बरणै किमिगाई॥ गीता में भगवत इमि गाया। मेरी शरण तरैं मममाया ५ अर्जुन सों भगवत इमिभाखा। तोसों कहौं गुप्त जो राखा ॥ मेरी शरण गहो सुखदाई। सब पापन सों देहुँछुड़ाई ६ शरण बिभीषण आयो जबहीं। लंका राज्य दीन्ह प्रभु तबहीं॥ लीन्हीं गज शरणागत जबहीं। गरुड़त्यागि धाये प्रभु तबहीं ७ शरण सुदामा को प्रभु देखी। कीन्हेकांचनमहल बिशेखी॥ शरण होइ द्रौपदी पुकारी। बसन रूपप्रगटे गिरिधारी ८ शरणागत गोपी जबआई। तब दीन्हे दुकूल यदुराई॥ शरणागत ब्रजलोग पुकारे। तब गोवर्द्धन गिरिकर धारे ९ दो०। या निष्ठाजे भक्तहैं बरणौं तिनके नाम। कथा शुभग भवनिधि तरणि जियालाल सुख धाम १० ॥

अक्रूर की कथा ॥

दो० कहौं कथा अक्रूरकी यदुबंशी रह जोइ। भगवत पद बि-

श्वास दृढ़ सुफलकके सुतसोइ ११ चौ० । जबहिंकंस हरिलेन पठाये । मथुरासों वृन्दाबन आये ॥ बृन्दाबन की भूमि मँझारा । भगवत के पद चिह्न निहारा १२ ध्वजाछत्र बज्रांकुश देखी । कमल चक्र जबमीन बिशेखी ॥ खड्ग तुला धनुशंख सुहाये । त्रिविध चिह्न देखतसुख पाये १३ रथतें उतरि दण्डवत कीन्हा । तिहि क्षण प्रेम जात नहिंचीन्हा ॥ बारहिंबार कहत सुखपाई । आजु देखिहौं कुँवर कन्हाई १४ जे पगपरसितरी ऋषिनारी । जे बन दण्डकपावन कारी ॥ जिन पगपरसितजो भयनागा । जिनपद गोपी मन अनुरागा १५ तिन पद चिह्न देखि अक्रूरा । बाढ़ो प्रेमपूर उर पूरा ॥ करत दण्डवत ब्रजमें आये । तहाँ कृष्ण के दरशन पाये १६ दो० । धाइ चरण देखतपरे कृष्ण लियोउर लाइ । ताक्षण को जिहि भांतिसुख कापै बरणो जाइ १७ कृष्ण कीन्ह आदर अमित रहे निशा सुख पाइ । कृष्ण बलहिलैप्रात उठि चले सुरथ बैठाइ १८ भई शंक मारग विषै येकोमल शुचि गात । मल्ल प्रबल बलकंस भट तहाँ लिये हम जात १९ प्रभु मनकी गति जानि कै दूरिकरन सन्देह । अद्भुतबपु दरशाइकै प्रगटतभे नवनेह २० मज्जन हित अक्रूरजी गे यमुनाके माहँ । हरि बलरामहिं देखियो जबहिं निमज्जो ताहँ २१ शय्या शेष अनूपमें शोभित शारँग पानि । सुर ऋषिसिधि निधि जोरिकर बिनवत हरि सुख दानि २२ गदापद्म दरचक्रहू जिन सोहत भुज चारि । कौस्तुभ मणि बनमालसह पीताम्बर सुखकारि २३ क्रीट मुकुट कुण्डल मकर भुज अंगद छबि खानि । लखत भये अक्रूर जल लखे बहुरि रथ आनि २४ लखिहरिजल रथबा-रबहु भगवत मायादेखि । दूरिभयो सन्देहमन जानोब्रह्म बिशे-खि २५ एक समय अक्रूरजी गेदेशान्तर काहिं । अति अबर्षण होतभो द्वारावति के माहिं २६ सकल प्रजागे कृष्ण ढिग त्राहि त्राहि जगदीश । रोग अपर दुर्भिक्ष सों अति ब्याकुल हमईश २७ परम भागवत देशसों गये निकरि अक्रूर । तातेपरोदुकाल

यह कहे बचन यदुबीर २८ सुनत प्रजाइत उत गये लाये तिन-
हिं बुलाइ। जलबरषो द्वारावती सकलप्रजा सुखदाइ २९ इबिधि
कथाअक्रूरकी सुन्दर सुखद महान। जियालाल किमि पारल-
ह भगवत जन यशगान ३० ॥

बिन्ध्यावली की कथा ॥

चौ०। बिन्ध्यावलिकी कथा सुहाई। अबबरणौं संतनसुख-
दाई ॥ राजाबलिकी सो पटरानी। भगवत भक्त महा सुखदानी
३१ जब बामन राजापहँ आये। त्रै पगभूहित बचनसुनाये ॥
कहो शुक्र ये बिष्णु मुरारी। करहिं प्रतिज्ञा भंग तिहारी ३२
रानी तोय नृपति करदीन्हा। देहु भूमि पुनिपुनि कहि लीन्हा॥
यासों सनिशीघ्र गतिधारा। शुक्र बचन जनि करहिं बिचारा
३३ किय संकल्प भूप जिहिकाला। बाढ़ी बामन देह बिशा-
ला ॥ द्वै पगनापि त्रिलोकहि लीन्हा। हित पदैक बंधन बलि
कीन्हा ३४ रानी लखि बहुबिनय सुनावा। कीन्ही कृपानृपहिं
अपनावा ॥ राज कोश को मानअपारा। सो करि दूरि क्षणक
में डारा ३५ जबलगि मानतजै जननाहीं। तबलगि पावनपद
परछाहीं॥ कहराजा है पदजो बाकी। द्वेहनापि प्रभु करियबि-
बाकी ३६ कहरानी सुनिये भगवाना। अर्द्ध अंग तिय बेद ब-
खाना ॥ मेरेसहित नापि प्रभुलीजै। औार काहलै प्रभुकहँ दीजै
३७ रानी यहकीन्ही चतुराई। जिमि तन पीड़ा जाइनशाई ॥
शरणागत रानीकहँ देखी। भगवत भये प्रसन्न बिशेखी ३८ ॥

बिभीषण की कथा ॥

छन्दगोपाल। कथा बिभीषण की सुखमूल। बरणौं
शिपि नाशक अघतूल ॥ बिश्वश्रवा केर सुत जौन ॥
पौत्र पुलस्त्य केर सुख भौन ३९ परम भागवत बरणे सोइ।
प्रातहि नाम लेइ जो कोइ॥ मंगल कुशल होइ सब तासु।
बालापन हरिपद रति जासु ४० कुंभकर्ण रावण सह भाइ।

कीन्हों जब तप मोद बढ़ाइ ॥ ब्रह्मा आये हित बरदान। मांगो भगवत भक्ति सुजान ४१ चौ०। जब रावण सीता हरिलाये। सदल राम बारिधि तट आये॥ मंत्रिन रावण पूँछन लयऊ। कहत बिभीषण तब इमि मयऊ ४२ जो चाहो निज कुल कुशलाई। राक्षस गण अरु लंक भलाई ॥ तौ सीता लै रामहिं दीजै। धरि पद शीश बिनय बहु कीजै ४३ क्षमा करहिंगे प्रभु अपराधा। लंक राज्य पुनि करहु अबाधा॥ सुनि इमि बचन बिभीषण केरा। कीन्हों क्रोध काल को घेरा ४४ क्रोधित कीन्हों चरण प्रहारा। तबहुँ बिभीषण नीति उचारा॥ जब अति बिमुख राम सों देखा। ताको दीन्हों त्यागि बिशेखा ४५ रावण तजो बिभीषण जबहीं। आयु हीन श्रीहत भो तबहीं ॥ राम कमल पद चित्त लगाई। चले बिभीषण आनँद पाई ४६ छन्दमनहरण। आजु सोई चरण कमल अवलोकिहौं मैं रमा जिन्हें भारतस्वकचन बनाइकै। जिन पद प्रगटी हैं सुरसरि अघहरिगये सुरलोक नृग पगनमनाइकै ॥ गौतम घरनि जिन पगनि परसितरी योगी जन लख उरकंज चित चाइ कै। जियालाल गोपी उर मदन कि तापं हर देखिहौं चरण आजु नयनं लगाइ कै ४७ दो०। बिबिधि मनोरथ करत इमि आयो सागर तीर। आवत रावण बंधु यह जानत भे रघुबीर ४८ मंत्रिन सों पूँछत भये कहे बचन सुग्रीव। शत्रु बंधु प्रभु जानिये शंका अहै अतीव ४९ कहो राम कह नीति भलि परहै एतीबात। शरणागत रक्षक सुखद मोकहँ जानिय तात ५० कोटि बिप्र अघकृत जुपै विश्व द्रोह अघजाहि। आवै मेरी शरण जो कबहुँ न त्यागौं ताहि ५१ शरणागत जे त्यागहीं हित अनहिताहि बिचारि। ते त्रिलोक में अधम नर अघ तिन काहँ निहारि ५२ चौ०। सुनिभगवत के बचन सुहाये। हर्ष सहित कपि कुञ्जर धाये ॥ अंगद जाम्बवान नल नीला। हनूमान सुग्रीब सुशीला ५३ मानसमेत बिभीषण लाये। रघुनन्द न समीप पहुँचाये॥ राम-

हिंलखो बिभीषण आई । त्रिभुवनशोभा देखि लजाई ५४ श्याम-लगातसरोरुहलोचन । शरणागतदारिददुखमोचन ॥ धनुषबाण कर कमलबिराजै । जटाजूट शिरशोभासाजै ५५ बल्कलबसन कुनपनिजधारे । आसन कुशसाथरी सँवारे ॥ पादपीठपदत्राण न जिनके । दरशनकीन्ह बिभीषणतिनके ५६ दूरिहिते तिनकीन्ह प्रणामा । कहिजैशरण सुखदसुखधामा ॥ शरणागत बत्सल भगवाना पाहि पाहि तब आसन आना ५७ शरणागत रक्षक रघुराई । धाइलीन्ह निजहियेलगाई ॥ कुशलप्रश्णपूछा रघुराई । सागराम्बु पुनिलीन्ह मँगाई ५८ तिलकराज्य लंकाहितकीन्हा । करन सुमनझरि देवन लीन्हा ॥ औरौ कथा बिभीषण केरी । बर्णन करौं महामुददेरी ५९ सो० । साहूकार जहाज रुकत भयो बारिधि बिषे । कहमंत्रिन शिरताज दीजिय कोऊमनुज बलि६० दीन्ह मनुज बलि ताहँ सागर हित बूड़त बहत । पहुँचो लंका जाहँ निशिचर लखिगे लंकलै ६१ चौ० । जबहिं बिभीषण देखतभयऊ । रामाकारतासु मनठयऊ ॥ पूजो सिंहासन बैठाई । बिबिधि भाँति कीन्ही पहुनाई ६२ वह मनुष्य निश्चर भयघोरा । आवन नित्यचहत इहि ओरा ॥ दैबहुरत्न बिदा तिनकीन्हा ॥ रामनाम लिखि मांथेदीन्हा ६३ जासों जाइ अम्बुनिधि पारा ॥ यह निजमनमें कीन्हबिचारा ॥ जिनको नाम भवाम्बुधितारा । लघुबारिधि यहकाहबिचारा ६४ जो सुखनहिं जहाजमें होई । सो सुख नरपावत भोसोई ॥ वह जहाज पुनिमारग पावा । तिनसों सबबृत्तान्त सुनावा ६५ सुनि सबभे भगवत केदासा । इबिधि बिभीषण चरित प्रकासा ॥ जियालाल भगवत जनचरिता । मुद मंगल आनँद की सरिता ६६ ॥

गजराज की कथा ॥

चौ० । अब गजराज कथा शुभ कहिये । जासों रामचरण रति लहिये ॥ गिरि त्रिकूट सुन्दर इकराजै । क्षीरोदना बृत

छबिसाजै ६७ योजन अयुत सुउच्च विशाला। तेतोही विस्तृत सुखशाला॥ ताऊपर त्रैशृंगरहावैं। रौप्यायस हिरण्यछबि छावैं ६८ धातुरत्न बहुभाँति सुहावैं। लतागुल्म तरु शोभापावैं॥ जल निर्झर निर्घोष सुहावै। पयोर्मीनधौतांघ्रि महावै ६९ जहँ अति मरकताश्मछबिछाई। श्यामल भूमिसमस्त लखाई॥ विद्याधर चारण गंधर्वा। सिद्धाप्सरामहोरगसर्वा ७० क्रीड़ा कन्दरान कर सोई। गीतनाद बहुबिधि तहँ होई॥ गर्जत कन्दर मनहुँ निहारी। सिंहनाद कर पर भय धारी ७१ तापर शोभित बिपिनि सुहावा। सुरोद्यान द्रुम शोभापावा॥ पच्छीबोलत बचन सुहाये। बन पशु संकुल बिबिधि महाये ७२ छन्दगोपाल। सुर रमणी मज्जन आमोद॥ सौरभांव्वनिल युतचहुँकोद। पुलिन सोह मणिबालुकयत्र॥ सरसरि शोभ स्वच्छ जलतत्र ७३ छन्द मनहरण। तौनदरी बरुण उद्यान ऋतु मतनाम क्रीड़ा सुर योषितान अतिसुखदान है। पूरणालंकार युत दिव्य शोभा धाम गिरि नित्य पुष्पफल द्रुमशोभ बहुखान है॥ चम्पक अशोक पारिजात औप्रियाल चूतपनसखजूरबीजपूरकाम्रपानहै॥ पाटल क्रमुकनालिकेरद्रुमधूक साल तालऔ मँदारद्रू, तमाल बटभान है ७४ सरल अरिष्ट प्लक्ष पिचु मन्द कोबिदार किंशुक उदुम्बर सुचन्दन सुहाये हैं। द्राक्ष इक्षु रंभा जम्बू बदरी कपित्थ बिल्व अक्षाभया मलक जँबीर छबिपाये हैं॥ तापैसर सोहत कमल मनमोहत षड़ंघ्रिगंध जोहत शकुंत शब्दभाये हैं। चक्रवाक सारस कारंडव सुहंस जलकुक्कुट को यष्टि आदि पच्छीगणछाये हैं ७५ मत्स्य कच्छपादि जलचारी सत्त्वधारी भारी बेतसकदम्ब नलनी पतीरवारी हैं। बंजुल कुरव कुन्द कुटज शिरीष कुब्ज इंगुद अशोक स्वर्ण यूथिनागजारी हैं॥ तीरजअनेक बृक्ष ऋतु ऋतु काल काल शोभित बिशाल जाल फल फूल भारीहैं। तहाँ एक काल घिसिगैरिक कपोल संगकरिणिन जालकरि सन गति धारी हैं ७६ बेत्र बेणुकीचक सकंटक बिशाल गुल्म नोचत

बनसपति आयो गजभारी है । जासु गंधमात्र हरि इभव्याघ्र व्याल मृग गौर कृष्णशरभ चमरि भयकारी है ॥ भागे वृकम-हिष बराह सल्यऋच्छ खड्ग साला वृक मरकट चेतना बिसारी है। घामताप उबत चुवत मद मत्तगज कलभ करिणि सहभार गिरिधारी है ७७ छन्दरामगीतिका । गिरि कपावत जात अलिकुल भ्रमत मदके लोभ । वृतस्व यूथ तृषार्त्तमद सों बिकल ईक्षणशोभ ॥ सूंघि सरकी अनिल पंकजरेणुरूषिततत्र । जातभयो समीप सरवर रहो शोभितयत्र ७८ धाइ प्रविश गजे-न्द्र देखत पियो शीतल नीर । पुष्करोद्धृतनीर मज्जन कीन हर्षशरीर ॥ बहुरिमज्जन को करायो कलभ करिणिन सोइ । शु-ण्डजल लै औंपियावत गृही मानहुँ कोइ ७९ गहत भोपद दैव प्रेरित नक्र क्रोधित तत्र । बलीइभसम सोउ खैंचत व्यसन गत गजयत्र ॥ भये आतुर कलभ करिणी खिचत गजको देखि । पार्ष्णिग्रहगजहू छुड़ावत परन छूट बिशेखि ८० कीन पुनि चिं-घार सब मिलि चलो बलकछु नाहिं । युद्धकरत इभेन्द्रनक्रहु पर-स्परजल माहिं ॥ कबहुँ गजइत खैंचिलावत ग्राहकहुँ निजओर । सहस सम्बत युद्ध या बिधि होतभो अतिघोर ८१ बिकलभोग-जराज कालमहानि बीतो यस्य । बढ़त दिन दिन नक्र बिक्रम लरतहै सँगतस्य ॥ इबिधि प्रापगजेन्द्र संकट लखन छुटन उ-पाइ । सकछुड़ाइ न ज्ञाति करिणी गजन सकत बचाइ ८२ मकर पाश बिधातु आवृत मैं परोइहि बार । परपरायण शरण गहिहौं जौन जगके पार ॥ जौन कोऊ ईश राखत मृत्यु सोहै जौन । भीतरच्छा करत भय सो जासु पंचक गौन ८३ दो० । जोप्रपन्न रच्छा करत सदादीन प्रिय यस्य । भय जासों नितभय करत शरण जाहुँगो तस्य ८४ या बिधि बुद्धि बिचार करि हिये मांझमनधार । पूर्व जन्मसीखोहुतो परम जाप्य उचार ८५ नम-

पंचकइति यद्भयादित्यत्रश्रुतिः भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेति सूर्यः भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्चमृत्युर्धावतिपंचमइति८३ प्रापन्नशरणागत८४ जाप्यस्तोत्र ८५

स्कार तिहि भगवतहि जासोंजग चैतन्य। आदि बीज पूरुषपरे ईशध्याइये नान्य ८६ जामें जाते जाहि करि यह जग आपुहि होइ। कारण कारजते परे स्वस्वयंभुव सोइ ८७ देवऋषय आदिक सकल जानत नहिं पद यस्य। अपरजानिहै कौनपुनि अहों शरणमैं तस्य ८८ जाको मंगल पद लखन मुक्त संगमुनि साधु। ब्रह्मचर्य आदिक बने अव्रणचरत अगाधु ८९ नामरूप गुणदोषहू जन्मकर्म नहिंयस्य। जग जन्माप्ययहेत निज माया सो तनतस्य ९० नमस्कारहै तासुहित परेईशहै जौन। ब्रह्मानन्त शक्ति जो रूपा रूपहु तौन ९१ नमः साक्षि परमात्मने आत्म दीपहै जोइ। मनचित वाणी के परे राखहिगो ममसोइ ९२ नैष्कर्म्य अरु सत्वसो पावत पंडित जाहि। मोक्षानँद कैवल्यपति शरणागत मैं ताहि ९३ निर्विशेष साम्याय नम शांतघोर घन ज्ञान। कारण सत्वादिक धरम शरणगही मैं आन ९४ नमस्कार क्षेत्रज्ञ प्रभु सर्व साक्षि सर्वेश। मूलपुरुष मूलप्रकृति चाहौं शरण बिशेश ९५ मोसम शरणागत पशू पाश बिमोचन नाथ। मुक्तरूप करुणा अयन राखिय नाथहुँ माथ ९६ आतम पुत्र गृह नारि धन सक्त चित्तदुष्प्राप। गुणसंग न वर्जित सदा ज्ञानात्मक हैं आप ९७ अर्थ धर्म कामादिक न देत भजन करि जौन। पूर्ण कृपा करि मोहिं प्रभु मोक्षण करिये तौन ९८ एकांती भगवत शरण जासों कछू न चाह। मंगल गुण गावत सदा मग्नानँद निधि माहँ ९९ अक्षर ब्रह्म परेशपर जो अव्यक्त कहाव। पूरण आदि अनंतजो तिहिशरणागत आव १०० ब्रह्मादिक जे देव सब वेद चराचर लोक। जासुकला लघु सो भये सो हरिहै ममशोक १०१ देवासुरनर नारिनिहिं नहीं न पुंसक होय। गुण कर्महु नहिं हेतमम रूप धरैगो सोइ १०२ नहिं केवल जीवन चहत ग्राह मुक्त इहिदेह। गज शरीर तामस भरो मोक्षण चाहिय एह १०३ सो मुमुक्षु

बनेबनविषे अव्रण अच्छिद्र ८९ अप्यय नाश ९०॥

मैं विश्वसृज विश्व अविश्व सुजौन। विश्वात्माअज ब्रह्मजो प्रणत परमपद तौन १०४ योगपक्व जिनके करम योग हिये छबिदेत। ऐसे योगी जिन लखत नमस्कार तिन हेत १०५ या बिधि गज अस्तुति सुनत ब्रह्मादिक सुरजोइ। विविधि लिंग अभिमानसों जात भये नहिं सोइ १०६ परि पूर्णत्वबिचारिकै प्रगट भये हरि तत्र। चक्रायुध शीघ्रगगरुड़ स्तूयमान गज यत्र १०७ प्रेम सहित अस्तुति करत ग्राह ग्रहित गज जौन। हरि आवत बिक्रम सहित देखो द्योमें तौन १०८ साम्बुज शुण्ड उठाइकै कहो कष्टसों बैन। हे नारायण अखिलगुरु भगवन्नम सुख दैन १०६ पीड़ित इभ लखि बीश तजि धाये सुर शिर ताज। अरिसों काटो नक्रमुख राखि लियो गजराज ११० चौ०। तहँ सुर ऋषय सिद्धगंधर्वा। ब्रह्मेशान पुरो गम सर्वा॥ फूलन की बर्षा बर्षाये। भगवत की अस्तुति शुभ गाये १११ सुन्दर दिव्य दुन्दुभी बाजे। नृत्य गानगंधर्वन साजे॥ जबहीं ग्राह देहतजि दयऊ। तत्क्षण दिव्य रूप तिहि भयऊ ११२ सोहूहूगंधर्व सुहायो। देवल शाप ग्राह तन पायो॥ कीन्ह प्रदक्षिण हरिहि प्रणामा। किल्बिष मुक्त गयो निजधामा ११३ बहुरि गजेन्द्र कृपा भगवाना। तत्क्षण भयो मुक्त अज्ञाना॥ पीत बास भगवत बपु धारी। सायुधभे सोहत भुज चारी ११४ पांड्यद्रविण सत्तम महिपाला। नाम सुइन्द्रद्युम्न बिशाला॥ भगवत आराधन इकबारा। मलयाचल आश्रम सुख सारा ११५ करिमज्जन मौनब्रत कारी। तापसवेषजटाशिरधारी॥ ताही क्षण अगस्ति तहँ आये। शिष्यन सह अति परमसुहाये ११६ देखि नृपति नहिं कीन्ह प्रणामा। लखि क्रोधित भे मुनि तपधामा॥ स्तब्ध बुद्धि गजबत नृपएहा। ताते अवशि लहै गज देहा ११७ तिरस्कार बिप्रन को करई।

स्तूयमान देवता जिनकी स्तुति कर रहे हैं १०७॥ अरि चक्र ११०॥

तातै इभ तमोंध तन धरई ॥ दै इमि शाप गये ऋषि ईशा । इन्द्रद्युम्न धरी निज शीशा ११८ इमि कौंजरी योनि नृपपायो। परनहिं भगवत सुरति भुलायो ॥ पूरुब हरिपूजा परभावा ॥ गजतनहू सुमिरन बनि आवा ११९ जो यहकथा सुनै अरु गावै। सुख संपति नाना विधि पावै ॥ स्वर्ग्य यशस्य कलुष कलि हारी। सकल अमंगल वृक्ष कुठारी १२० दो० । प्रातहि उठि शुचि पढ़हिं जे दुःस्वप्नादि नशाहिं। पुनियाविधि बोलत भये भगवत गजपति पाहिं १२१ छन्द घनाक्षरी। तुमहिं हमहिं सर बन गिरिकन्दराहु बेणु गुल्म कीचक सुबेत्र सुरपाद पान। शृंग एलखात जौन ब्रह्म शिव ममधाम क्षीर निधि प्रिय धाम श्वेत द्वीप भाशमान ॥ कौस्तुभ श्रीवत्स बनमाल गदाकौमोद-की पांचजन्य चक्र सुपरण पतगेश जान। शेष रमानारद प्रह्लाद शिव अज मत्स्य कूर्म क्रोड़ि आदि अवतारममसु-खदान १२२ छन्द मनहरण। अनल सुसोम सूर्य प्रणव अव्य-क्त सत्य धेनु बिप्रधर्म कर्म पुण्य मम जानिये। कश्यप सुसोम धर्मपतनीजो दक्षकन्या सरस्वती गंगा नंदा कालिन्दी बखानि-ये॥ ऐरावत नद ध्रुव ब्रह्मऋषि सप्तपुण्य रूपमनु पुत्रद्रुमहोंज-सप्रमानिये। उठिप्रातकाल शुचिएकचित्त रूपमम एतेजियाला-ल सो सुमिरिअघ भानिये १२३ दो०। सुनिय अंग ममध्याइ है इननामन सों जौन। प्राणात्यय में पाइहै निर्मल मति को तौन १२४ याबिधि कहि गजराज सों शंख बजायो अत्र देवन हर्ष बढ़ाइकै चढ़े गरुड़पर तत्र १२५ इमि गजेन्द्र मोक्षण कह्यो पुण्यरूप सबकाल। जियालाल कहि श्रवण करि नाशत पाप कराल १२६ ॥

ध्रुवजीकी कथा ॥

चौ०। ब्रह्मपुत्र स्वायंभुवनामा। शतरूपा पति आनँदधामा॥ द्वै सुत तिनके भये ललामा। पादोत्तान प्रियव्रत नामा १२७ नृप उत्तानपाद द्वैनारी । सुरुचि सुनीति नामसुखकारी ॥

सुरुचि अमित प्रियपति को जैसी । ध्रुव सुत जासु न सो प्रियतैसी १२८ दो० । एक समय नृप सुरुचि सुत लालन करतरहयत्र । उत्तम नामहिं देखिकै जातभये ध्रुवतत्र १२९ नृपति कियो आदर नहीं सुरुचि सेर्ष्य कहएह। नृप आसनकिमि बैठिहो धरन उदरममदेह १३० जनमलियो तियऔरके तुम बालकनहिं जान।ताते दुर्लभ अर्थमें कियोमनोरथ आन १३१ नितपकरि पुरुषाराध्यकै तासुअनुग्रहपाइ। जोनृप आसन चा ऊाजन्म लेहुममआइ १३२ मातु सवतिके बक्रबच बिद्ध हिये सम बान। श्वासलेत क्रोधित मनहुँ दण्डहतो अहिजान १३३ लखतनबोलत रुदन करि चलेत्यागि ध्रुवतात। श्वासलेत फरकत अधर ओष्ठगये डिगमात १३४ गोद लियोरोवतनिरखि सुनीपौरमुखबात । मातु सवति के बचन सुनि भयेव्याथित जिमिगात १३५ धीरज तजि रोवनलगी शोकदावजिमिबेलि। बचनसवतिके सुमिरिकै जिमि बनमृगी अकेलि १३६ बृजिनपारपायो नहीं दीर्घश्वास लैयत्र। तबसुत सो बोलत भई यहबिचारि मन तत्र १३७ हेसुत दीजिय दोषकिहि दोषन काहूमान। जोपरको दुखदेतहै दुःखलहतसो आन १३८ सत्यसुरुचिअभिहित सुवन मेरेजन्मजुलीन्ह।भार्या कहत लजात नृप भाग्य हीन ममकीन्ह १३९ भगवत पद आराधना करियपुत्रसति नेह। सत्य बचन तबमातुके चह आसन जो एह १४० चौ०। जिनपदकमल पूजि सुखधामा। पारमेष्ठ्यलह ब्रह्मललामा॥ जिनपद कमल एकमति धारे। भगवान्मनु पितुपिता तिहारे १४१ बहु दक्षिणा अमित मषकयऊ। पायो जोकोऊ नहिं लयऊ॥ भौमदिव्य अपवर्ग्यहु जेते। पावत भये सकल सुखतेते १४२ ताकी जाइ शरण सुतगहिये । वत्सल भृत्यनाम जिहि कहिये॥ मृग्यमुमुक्षुकंज पदवाटा। भाव अनन्यधर्म निजठाटा १४३ मनअस्थिरकरि अचल बनाई। भजिये पूरुष आनँदपाई॥ तातेअन्यनदेखौं

सोई। जोदुख दूरिकरै सुतकोई १४४ दो०। सुनि माता केवचन
इमि अर्थागम सुख धाम। आत्म आत्ममें रोकिकै चले त्यागि
पितुग्राम१४५नारदयह जानतभये मनकी गति पहिंचानि। अघ
नाशक करशीशधरि विस्मित बोलेआनि१४६अहोतेज क्षत्रियन
कोमानकभंगसहैन। बालक यद्यपि उरधरो असन्मातुकेबैन१४७
चौ०। नारद कहमानहुँ अपमाना। नहिं पुत्रक अबहीं तव जा-
ना॥क्रीड़ासक्त कुमारन देखा। ताते तोसों कहतबिशेखा१४८य-
द्यपि होइ मान अपमाना। तबहूँ असंतोष नहिं आना॥ केवल
मोह जानिये सोई। प्रगट सकल निज कर्म न होई १४९ तित-
नेहीम करिय संतोषा। दैवेश्वर गति काहुन दोषा॥ जासु प्रसा-
द चहत पद जोई। दुराराध्यं पूरुष है सोई १५० माता जो मा-
रग दरशायो। सो मारग मुनि जन नहिं पायो॥ ढूँढ़त तीव्र
समाधि लगाई। बीते अमित जन्म इमि भाई १५१ ताते घूमि
भवन निज जैये। वृद्धावस्था में मन लैये॥ जो प्रारब्ध माहँ
जिहि भांती। सुख दुख भोग करत दिन राती १५२ तामहँ कर
सन्तोषहि जोई। तमके परेजात है सोई॥ पुण्य क्षीण सुखभोगे
होई। दुख भोगे पापक्षय सोई १५३ या बिधि सुनि नारद के
बैना। बोलत भे तब ध्रुवगुण ऐना॥ सुरुचिं बचन शर बिंधे
हमारे। ताते रुकत न बचन तिहारे १५४ त्रिभुवन परे लोक है
जोई। जीतन चहत सत्य हम सोई॥ पुरुषा गये नहें मम ज-
हँवां। औरौ कोऊ गयो न तहँवां १५५ सो मोसों उत्तम मग
कहिये। ब्रह्मपुत्र जगहित तुम रहिये॥ बीण बजावत घूमत
जोई। जग हितार्थ अर्कवत सोई १५६ नारद सुनि ध्रुव मुख
इमि बानी। बोलत भये दया उर आनी॥ माता जो मारग दर-
शायो। सोई मंगल दायक गायो १५७ ताते वासुदेव पद ध्या-
इय। काम धर्म मोक्षार्थहु पाइय॥ वासुदेव पद सेवा जोई।
जोइच्छादायकहै सोई १५८ ताते तात जाहु सुख पाई। यमु-
ना तट हरिबसत सदाई॥ पुण्य रूप मधुबन जहँ गायो। करि

मज्जन तहँ नित्य सुहायो १५९ नित्य कर्म करिकै सुख दाई। बैठिय आसन शुभग बनाई ॥ त्रिवृता प्राणायाम बिचारी । प्राणेन्द्रिय मन मल हरिडारी १६० धीरेधीरेमलहि बिहाई । गुरु न गुरू ध्याइय मन लाई ॥ अभिमुख ईक्षण बदन प्रकाशी। शुभ नासा सुभ्रुव सुख राशी १६१ सुर सुन्दर कपोल छबि छाये । अरुणोष्ठेक्षण अधर सुहाये ॥ रमणीयांग तरुण तन शोभा । तो पद श्याम निरखिमन लोभा १६२ करुणार्णव शरणागत दानी । श्रीवत्सांक चिह्न छबि खानी ॥ भुजाचारि जन रक्षक गाये । गदा पद्म दर चक्र सुहाये १६३ कीट मुकुट वनमाल सुहाई । कुण्डल कौस्तुभ मणि सुखदाई ॥ वस्त्रपीत कौशेय सुहाये । कांचन नूपुरअति छबि छाये १६४ क्षुद्रघंटिका शब्द सुहाई । जियालाल अति आनँद दाई ॥ पदनख मणि समान छबि राशी । उरं बारिज महँ प्रभा प्रकाशी १६५ या बिधि बपुउरलाइ बिशेखै । किंचिद्धास सहित मुख देखै ॥ देखै रूपटरन नहिं पावै । या बिधि एक चित्त मनलावै १६६ दो०। परमगुप्त अब मंत्र यह तोसों करत बखान । जाहि सात दिन पाठकरि खेचरलखतपुमान १६७ चौ०। यह कहि नारद मंत्र बतायो । द्वादश अक्षर जो सुख छायो ॥ यही मंत्र सों पूजन कीजै । नाना बस्तु जौन लखि लीजै १६८ शुचि जल माल्य वन्य फल मूला । अंकुर चैल तुलसि हरशूला ॥ प्रतिमा पाषाणादिक कीजै । क्षित्यंब्वादि माहँ वापूजै १६९ रोकि चित्त मुनि शांत रहावै । वन्य भोजि जित बाग सुहावै ॥ माया रूप धरे भगवांना । तिनको करैं हिये निज ध्याना १७० दो० । मनसा बाचा कर्मणा भगवत पूजै जोइ । मान त्यागि युत भक्ति जन धर्मादिक लहसोइ १७१ इमि सुनि नारद के बचन परिक्रमा ध्रुव कीन । करि प्रणाम मधुबन गये हरिचरणन चितदीन १७२ चौ० । जबहीं ध्रुव मधुबनको गयऊ ॥ अंतःपुरहि जात मुनि भयऊ ॥ नृपति कीन्ह अति आसस्वासा । तब ना-

रद् यह बचन प्रकासा १७३ राजन तव मुख रहा सुखाई। शोचतकाह कहिय समुझाई॥ अर्थ धर्म कामादिक माहीं। सो तौ नाश भयो कछु नाहीं १७४ सुनि नारद मुनिके येबैना। बोलतभये नृपति गुण ऐना॥ दया हीन मैं स्त्रैण महाना। मो सम अपर कौन अज्ञाना १७५ पांच बर्षकर बालक जोई। मातासह निकार मैं सोई॥ अपि अनाथ ब्रह्मवन माहीं। काहवृका ताको नहिंखाहीं १७६ परिम्लान मुख पंकज जोई। क्षुधित श्रांत सोवै भुवि सोई॥ बैठन अंक प्रेम युत आयो। ताको मैं नहिं आदर लायो १७७ अधम कौन मुनि मोहिंसमाना। स्त्रीजित दुष्टात्मा अज्ञाना॥ सुनि नारद किय बचन प्रकासू। नृपति शोच करिये जनि तासू १७८ देव गुप्त निज पुत्रहिं जानौ। ताको अति प्रभाव उर आनौ॥ जाको सुयश जगत मैं होई। दुष्कर कर्म करैगो सोई १७९ तेरो सुयश करत विस्तारा। लघु दिन मैं आवैगो बारा॥ नारद बचन सुनत या भाँती। पुत्रहि शोच नृपति दिन राती १८० करि मज्जनयमुना जल माहीं। ध्रुव व्रत करत भये निशि ताहीं॥ कीन्ह चित्त एकाग्रबनाई। भगवत परिचर्य्या मन लाई १८१ बदरु कपित्थ अशन दिन तीजे। इमि करि वृत्ति मास हरि ईजे॥ द्वितिय मास जबहीं चलि आयो। तृण पर्णादि छठे दिन खायो १८२ तृतिय मास जब आवत जाना। नवमें नवमें दिन जल पाना॥ करि अर्चन भगवत को कीन्हों। अचल समाधि लगाइसु दीन्हों १८३ चौथे मास बारहें दीना। बाय्वाहार श्वास जित कीन्हा॥ पंचम मास जबहिं चलि आयो। जीती श्वास समाधि लगायो १८४ ध्यावत ब्रह्म एक पद जोई। ठाढ़े अचल थाणु सम सोई॥ मनहिं खैंचि एकाग्र लयाई। भगवत रूप लखत सुखदाई १८५ दो०। महदादिक आधारजो पूरुष ब्रह्म प्रधान। ताको धारण कीन्ह ध्रुव लोकत्रय भय मान १८६ एक

मातासह अनादर सो १७६॥

चरण ठाढ़ो भयो पार्थिव नन्दन यत्र । पदाङ्गुष्ठ पीड़ित मही नमित भई सो तत्र १८७ चौ० । चढ़त तरीजैसे गज कोई। पद पद में कंपित सो होई ॥ बिष्णु केर विश्वात्मक ध्याना । रोकि प्राण मग आत्मनि आना १८८ श्वास आपनी जब ध्रुव रोका। निरुच्छ्वास पीड़ित भे लोका ॥ लोक पाल सह ब्याकुल भयऊ । शरणागत भगवत के गयऊ १८९ नहिं कारण जानिय भगवाना। प्राण रोध चर अचर महाना ॥ मोचण करिय बृजिन सो नाथा। बार बार नाइय पद माथा १९० कर तप बाल दुरत्यय सोई। मयि संगत आत्मा है जोई ॥ तासों भय कीजिय कछुनाहीं। जाइ निबर्त्त करब हम ताहीं १९१ सुनि भय त्यागि देव सब गयऊ। मधुबन बहुरि जात हरि भयऊ ॥ देखो ध्रुवहि समाधि लगाये। रूप अनूप कमल चित लाये १९२ अन्तर्द्धान भयो बपु सोई। खोले दृग ध्रुव ब्याकुल होई ॥ देखो जिमि उर रूप बिशेखा। ताही भाँति अग्र पुनि देखा १९३ दण्डाकार परो भूमाहीं । प्रेम सहित लख भगवत काहीं ॥ करि न सकत अस्तुति चह कीन्हा । हरि मुख कर जोरे चित दीन्हा १९४ ता मन गति भगवत जब जाना। शंख ब्रह्ममयता मुख आना ॥ जबहरि मुखमें शंख लगायो। अस्तुति करन तबहिं ध्रुव लायो १९५ जो मम अंतर कीन्ह प्रबेशा । शंख छुवाइ कीन्ह उपदेशा ॥ कर चेतन इन्द्रियन सदाहीं। नमस्कार तिहि भगवत काहीं १९६ छन्द मनहरण। एक तुम प्रगट करत महदादिकन आत्म शक्ति माया गुणमयीजो बिशेखिये। बिरचि प्रबेश करि असत गुणन मधि नाना रूपदारुषु बिभावसु सोलेखिये ॥ तुमहींसों ज्ञानपाइ लखो है बिरंचि बिश्व सोवतसो जागि कोई जाविधिसो देखिये। यांचत तुमहिं पूजि मनुज कुणप भोग छलित सुमाया तव निरय जो पेखिये १९७ ध्यान पादपद्मकरि श्रवण सुयश तवचहत स्वरग

अर्थ बिभावसु अग्नि ॥ कुणपशरीर ॥ निरयनरक १९७

सुख असत सुगातहै। क्षीण पुण्य कलित चलित निज आसन सो अंतकासि लुलित बिमानहू सो पात है ॥ भक्ति तव बहत जे संग होइ तिन मम महतन आशय अमल दरशातहै। रावरे गुणानुवाद अमृत सुपान् मत्त तरिय भवाब्धि उरु ब्यसन लखातहै १९८ भूलिजात देह गेह सुहृद कलत्र पुत्र चरण कमल गंध लुब्ध जनसंगहै। महदादि कारण सुजासुस्थूल रूप जौन जानिये जो परिचित देवनादि अंगहै॥ जानत नईश्वर तिहारो रूप ब्रह्मरूप यत्र मन बुद्धिहू नजात बाणी भंग है। सोई प्रभु भक्त हेत धरम गलानि देखि धारत बिबिध तनुश्वेत पीतरंग है १९९ दो०। कल्प समय जग जठर धरि शेष अंककर सैन। नाभि पद्म सों अज भये बिंनऔं सब गुण ऐनं २०० आदि पुरुष कूटस्थ प्रभु त्रिगुणाधशि सुरेश। नित्य मुक्त परिशुद्ध प्रभु नावों माथ रमेश २०१ याबिधि सुनि ध्रुवकी बिनय हँसि बोले भगवान। तेरेउरमें जौनहै नृप बालक मैं जानें २०२ करिआयो संकल्प जो देहौं सुब्रत सोइ। अन्य अधिष्ठित जो नहीं अति दुरापथल जोइ २०३ आहित योतिष चक्रहैं ग्रह तारादिकजौन। स्थिर मेढीवत शुभग॰हैकल्पबासिपर तौन २०४. धर्म अग्नि कश्यप उशन बनबासी मुनिजौन। भ्रमत सतारक यत्रहैं करत प्रदक्षिण तौन २०५ अब्द सहस छत्तिस करिय भूमण्डल प्रतिपाल। पिता दत्त बनजाइगो तप कारण भूपाल २०६ उत्तम तेरो बंधुजो जैहै मृगयाकाहँ।सुरुचि रुदनकरि जाइहै सुनि गतासु सुतताहँ २०७ सोऊ दावानल जरिहि याबिधि कीजौ राज। यज्ञन सों मेरो यजन कीजौ सहित समाज २०८ सत्याशिषइत

अंतक काल लुलित खण्डित १९८ महदादि महत्तत्त्वादि परिचित व्याप्तना+नर १९९ अन्य अधिष्ठित जो नहीं अर्थ जहां कोई नहीं प्राप्तभयो दुराप दुष्प्राप २०३ आहित अर्थात् समर्पित मेढीअर्थ धान्य मर्दनार्थ भ्राम्यमाण पशूनांबंधनस्तंभः स्थिर कहिये तीनों लोक नाश भये परभी जिसका नाश नहीं २०४ ॥

भोगकरि अंत सुमिरि मोकाहँ। लोक नमस्कृत धाम मम बहुरि जाइगो ताहँ २०९ ऊरध सो थल ऋषिन के प्राप्त होउगयत्र। कबहूं पात न होइगो सदारहौ थिरतत्र २१० इत्यर्चित भगवान तहँ दैवरसहित उछाह। जातभये निजधामको देखत सुत नरनाह २११ पूर्ण मनोरथ होतभे हरिपदसेवातौन। अतिप्रसन्न मननहिं भयो कीन्हों निजपुर गौन २१२ अति प्रसन्न मननहिं भयो याको कहा कारण है यह विदुरजी महाराज ने मैत्रेयजी महाराजसों पूँछचो है श्रीमद्भागवत में कि दुर्लभ जो परमपद है कामनायुक्तनको सोई भगवत के चरणारबिन्दों की सेवा सो पाइएकहीजन्म मेंसो क्योंप्रसन्न न भये तब मैत्रेयजी ने कह्यो कि जाकारण सों मनध्रुवजीको अत्यन्तप्रसन्न नहींहोतभयो सो कहूंहूं जासमय ध्रुवजी महाराज सपत्नीमाता के बाण रूपी बचनों से वेधित होकर भगवत शरण गही फिरभगवतको अत्यन्त प्रसन्नकर मुक्ति पतिसों मुक्ति की इच्छानकरी ताहीसों मनप्रसन्न भयो पीछेमन में अत्यन्त ताप प्राप्त भई यथाह ध्रुवः (श्लोकाः)समाधिनानैकभवेनयत्पदंविदुः सनन्दादयऊर्ध्वरेतसः॥ मासैरहंषड्भिरमुष्यपादयोश्छायामुपेत्यापगतःपृथङ्मतिः १ अहोवतममानात्म्यंमंदभाग्यस्यपश्यत॥ भवच्छिदःपादमूलंगत्वायाचेयदंतवत् २ मतिर्विदूषितादेवैःपतद्भिरसहिश्नुभिः॥ योनारदवचस्तथ्यंनाग्राहिषमसत्तमः ३ दैवीं मायामुपाश्रित्यप्रसुप्तइवाभिन्नदृक्॥ तप्येद्वितीयेप्यसतिभ्रातृभ्रातृव्यहृद्रुजा ४ मयैतत्प्रार्थितंव्यर्थंचिकित्सेवगतायुषि॥ प्रसाद्य जगदात्मानंतपसादुष्प्रसादनम् ५ भवच्छिदमयाचेहंभवंभाग्यविवर्जितः॥ स्वाराज्यंयच्छतोमौढ्यान्मानोमेभिक्षितोवत ६ ईश्वरात्क्षीणपुण्येनफलीकारानिवाधनः २१२ दो० । आवतध्रुव इमि बचन सुनि मिलैमरो जिमिकोइ। बूड़तपावैथाहजिमि नृपातिलहोसुखसोइ २१३ मैंअभद्र के पुत्रकहँ श्रद्धानृपति न कीन। सुमिरि बहुरि नारद बचन हारवात हरदीन २१४ रथसदश्व आ-

रूह्य पुनि कार्त्तस्वरमय जौन। ब्राह्मणकुल बृद्धन संहित मंत्रि बंधुयुत तौन २१५ नादशंख दुन्दुभि सहित ब्रह्मघोष युतराउ। पुरबाहर तूरणगये पुत्रेक्षण के चाउ २१६ रानी सुरुचि सुनीतिहूं उत्तम युतपुनि तौन। रुक्म सजी शिविकान चढ़ि तत्क्षण कीन्हो गौन २१७ आवत उपबन निकट लखि रथतेकूदि महीप। प्रेम बिकल तूरण गहो लियोलाइ उरनृप २१८ भेंटे भुजभरि अंगजहि उत्कंठाअति तस्य। अच्युतांघ्रि अस्पर्श सों नशेपाप बपुयस्य २१९ शीशसूंघि चख बारिसों दीन्ही स्नान कराइ। पूर्ण मनोरथ होतभे पुनिगह सुतपितु पाइ २२० तिनसों आशिष पाइकै मातुन कीन्ह प्रणाम। विप्रन कुल बृद्धन बहुरि कियप्रणाम सुखधाम २२१ दीन्हों सुरुचि अशीश लखि नमित लियो उरलाइ। हरिप्रसन्न हैं जासुपर ताके जगत सहाइ २२२ उत्तमध्रुव पुनिपुनि मिलें आनँद अधिक बढ़ाइ। प्रेम बिकल दोनों भये धारा अश्रु बहाइ २२३ प्राणाधिक सुतपाइकै जननी तासु सुनीति। लही आधि उरलाइ कै बढ़ी हिये अतिप्रीति २२४ बक्षोजनसों पय बहो नेत्रनसों जलधार। राज्यहेत अभिषेक यह मनहुँ लहो सुकुमार २२५ छन्द भुजंगप्रयात। कहैं लोगरानी महाधन्यतूहै। गयो दुःख पायोसु आनन्द जूहै॥ लखो बालजैसे मरो कोइपावै। हरैगो प्रजादुःख शत्रून्नशावै २२६ तुपूज्यो भलेचित्त लारावणारी। घरै जीति आयो महामृत्यु भारी॥ लखो भूपआनन्दसों पुत्रदोई। चढ़ा हस्तिनीपै चले नग्रसोई २२७ यशै उच्चहैं सूतबन्दी महाना। जहाँ जाइँबाढ़ैतहाँ नन्दनाना॥ तहाँजाइ देखी महानग्रशोभा। बिलोके जिसै चित्तकाको न लोभा २२८ सुगंधीनि सींचेसुमारग्गराजैं। मणीनै सुबन्दीनि बाराहुसाजैं॥ सबृन्दै सुरंभान खंभा सुहावैं। जियालाल वेदध्वनी विप्रगावैं२२९ सुपुगीफलों+बाल बृक्षों किशोभा। लसैंअम्रके पत्रहू औरकोभा॥ सुबासै सुफूलान

अर्थ सबृन्द फलमंजरीयुक्त २२९+ बालबृक्ष कहिये लघुबृक्ष॥

की मालशीभैं । लसैंदाममुक्तानकी चित्तलोभैं २३० सबैद्वार
में कुंभ राजें सदीपा । सजेधान्य लाजाहुलाजें समीपा॥ पुरी
सा अलंकार शोभा न साजै। मनो नारि सौभागिनी रूपराजै
२३१ दो० । मृष्ट रथ्यचत्वर शुभग चन्दन चरचितयत्र ।
सोहत बलितगडुल सुफल लखत जात ध्रुवतत्र २३२ दधि
दूर्वा सिद्धार्थयव पुष्प फलाम्बु समेत । चढ़ी अटारिन नारि
गण बरषहिं ध्रुवअतिहेत २३३ मधुरगीत याविधि सुनत गये
भवन पितु काहँ। मणिसमूह शोभितजहाँ मणिदीपावलि जाहँ
२३४ शुभग सेज पयफेनवत रुक्म परिच्छद यत्र। दांतासन
बहुमोलक रुक्म उपस्कर तत्र २३५ गयेतहाँ दिबिदेववत लालि
त पितुकियवास। ललना रत्न समेत जहँ सुन्दर करत प्रकास
२३६ चौ०।जहाँ बिचित्र रम्य उद्याना। कूजद्विहँग भ्रमरकरगा-
ना॥ बापी शुभजहँ मणि सोपाना । फूले कुमुदोत्पल बिधि
नाना। २३७ कारगडव अरुहंस सुहाये । चक्रबाक सारस छबि
छाये॥ भूपति तासुतकेर प्रभावा। लखिसुनिकै उरविस्मय आवा
२३८यौबन प्राप्त पुत्र निजदेखी । प्रजा जननको संमतलेखी ॥
प्रजानुरक्त बहुरि नृपपेखी । भूपति कीन्हों ध्रुवहि बिशेखी २३९
आपुहि गुनिप्रवयस भूपाला । बनगे चरण शरण गोपाला॥
जो शिशुमार प्रजापति कन्या । भ्रमी नाम उपयेमे धन्या २४०
बत्सर कल्प भये सुत दोई। कन्या बायु इलापुनि जोई॥ उत्क
ल पुत्र जन्यो नरनाहा। मृगयागो उत्तम बिन व्याहा २४१
पुगय जनन मारो गिरि माहीं। माता गई मरी सो ताहीं॥
ध्रुवने सुनो भ्रातृ बध जबहीं। चले कोपि शुच अर्पित तबहीं २४२

दाम कहिये माला २३० लाजा कहिये लाई २३१ अर्थ सिद्धार्थ श्वेतसर्ष
प २३३ अर्थ रुक्मपरिच्छद कहिये सोनेकी सामग्री दांतासन कहिये हाथी
दांतके पर्य्यंक रुक्म उपस्कर कहिये स्वर्ण खचित २३५ दिविकहिये स्वर्ग ल
लना कहिये स्त्री २३६ प्रवयस कहिये वृद्ध २४० अर्थ उपयेमे कहिये बिवाह
करतभये २४० शुच अर्पित कहिये शोच युक्त २४२

चढ़ जैत्र स्यन्दनहय जोई। पहुँचे पुण्य जनालय सोई॥ गये उदीची दिशि कहँ राजा। रुद्रानुचर सेविता भ्राजा २४३ हिमवत द्रोणी लखी सुहाई। गुह्यकपूरित पुरी लखाई॥ शंख बजायो तबहिं नृपाला।.दिशि अम्बर पूरोधुनि जाला २४४ उपदेविन अतिशय भयपावा। सुनिदरवर रवघोरमहावा॥ निकसे यक्ष निजायुध धारी। बली सुनत शंखध्वनि भारी २४५ आवत लखो तिनहिं ध्रुव जबहीं। तीनि तीनिशर मारेसबहीं॥ तब देवन किय क्रोध अपारा। एकहि बार तजी शरधारा २४६ बहुरि परिघ निस्त्रिंशप्रहारा। प्रास परश्वध शूलहु मारा॥ शक्ति भुशुंडि रिष्टिधरिबीरा। बर्षत भये कोपिरणधीरा .२४७ वत्सदंत नाराच अपारा। छूटे बहु बिपाठ खर धारा॥ लै शायकं बहुंपायक धाये। स्यन्दनघेरिमारु रटलाये २४८ तेरह अयुत पुण्य जन जोई। शस्त्रन सों छायो रथ सोई॥ तात्क्षण ध्रुव तहँ दृष्टि नआवै। गिरिहि यथा आसार छपावै २४९ हाहाकार भयो तिहिकाला। बोले सिद्ध बचनइमिहाला॥ मानव सूर्य हतो यह जोई। पुण्य जनार्णव बूड़ोसोई २५० गर्जत यातुधान मुदसाने। आपनि बिजय जानि हरषाने॥ निकसो स्यन्दन ताही बारा। भास्करयथा टारिनीहारा २५१ करतदिव्य धनुको टंकोरा। द्विषत खेदकारकभो शोरा॥ काटेअस्त्र औघ शरधारा। घनानीक जिमि बायु प्रचारा २५२ काटि बर्म भेदे शरदेहा। असनि गिरीन यथाकर वेहा॥ मारत भल्ल तमकि ध्रुव जबहीं। कुण्डल सहित कटत शिर तबहीं २५३ तालआभ ऊरू कटिगिरहीं। सबलय भुजखण्डित भूपरहीं॥ मुकुट हार उष्मीक समेता। मुक्ता माणि छाये रणखेता २५४ हता वशिष्ठरहे रणजोई। ध्रुव

जैत्र कहिये जय हेत २४३ द्रोणी नाम कन्दरा २४४ उपदेवी नामयक्षोंकीस्त्री २४५ नाराच कहिये समस्त लौहमय तिसीकी आकृत वत्सदन्तभीहै यथाह कार्ष्णा यसोऽथ नाराचः वत्सदंतस्तदाकृतिः॥ बिपाठ कहिये स्थूल दण्डवाण यथा विपाठः स्थूलदण्डः स्यादितिकल्पद्रुः सायक कहिये खड्ग यथाशरे खड्गेच सायकं इत्यमरः २४८॥

सायकन रक्षगण सोई ॥ घायल भागे अति भय पाई। जिमि करिगण क्रीड़ित हरिजाई २५५ तदनन्तर ध्रुव लखो निहारी। पवन प्रचण्ड बरष रजभारी ॥ परो सुनाइ जलधि रव तहँवां। छाये व्योम पूर्ण घन जहवाँ २५६ छन्द मन हंस ॥ तहँ तड़ित होत प्रकाश अतिशय भयकरं। बिण्मूत्र मेदसपूय बर्षत नर बरं॥ पुनि गिरत अग्रकबंध नभसों आइ कै। गिरिगिरत नभ सों दिशिन अति भयदाइकै २५७ दो०। गदा परिघ निस्त्रिं-शद्दू मूसल अस्म प्रहार। अहि पविसम निज श्वास सों बमत अनल की धार २५८ सिंह ब्याघ्र धावत तहाँ करी मत्त बहु यूथ। जलधि भूमि बोरत चले भीमोर्मीन बरूथ २५९ अति भीषण कल्पांतवत घोरशब्दहुव तत्र। शूरन त्रासन योग इमि होत भये बहु यत्र २६० असुर आसुरी मायया प्रगटातिग्मगति कीन। ध्रुव परस्तखि माया प्रबल मुनिन कहन इमि लीन २६१ नाम धेय निज स्वामि को लीजिय बाणनरेश। दुस्तर मृत्युहि तरतजग जोजपि नामरमेश २६२ सुनत ऋषिन के बचन इमि कीन्हों ध्रुवसंधान। जो नारायणबाणहै जासुप्रभाव महान२६३ चौ०। लिय नारायण शरध्रुव जबहीं। माया नशी निमिषमहँ तबहीं ॥ कोटिन प्रगटे बाण महाई। कीन्ह प्रवेश शत्रुदल जाई २६४ हन्यमान तीक्ष्णशर घोरा। पुण्यजनन किय क्रोधअथो-रा ॥ अस्त्र शस्त्र कर धरिसब धाये। सुपर्णपरमानहुँ अहिआये २६५ आवत देखि बाण ध्रुवछांटे। शिर उरु बाहु भटनके काटे॥ मण्डलार्क दीन्हों पहुँचाई। जाहि भेदि योगी जन जाई २६६ हन्यमान गुह्यकन बिशेखी। सर्षि आइ मनु बोले देखी ॥ अब जानि बत्स क्रोध उर करिये। तमोद्वार अछ मानस धरिये २६७ निरापराध पुण्यजन मारे। यह नहिं कुल के उचित हमारे॥ निन्दित कर्म तात यह होई। पुण्य जनन मारे तुम जोई २६८ दो०। इक अपराध प्रसंग सों बधे बहुत तुम तात। हरि भक्तन साधून यह मारग नाहिं लखात २६९ हरिको भूताबास गुनि

सब प्राणिन गुणि आप। विष्णु परम पद पाइयो ध्रुव राध्य करि
जाप २७० सो तुम हरिको ध्यान करि भगवत भक्त कहाइ।
निन्दित कीन्हों कर्मकिमि सतव्रत शिक्षा पाइ २७१ करुणा मै-
त्रितितिक्षया सबजन्तुन चितलाइ। लखि समत्व प्रभु अखि-
लगुरु रहत प्रसन्न सदाइ २७२ जबप्रसन्न भगवत भये प्राकृत
गुण ना जात। जीवमुक्त है ब्रह्ममें प्राप्त होत है तात २७३
पंचतत्त्वसों होतहैं योषित पूरुषअंग। तिन व्यवाय सों प्रगट
जग पुनि पुनि उभय प्रसंग २७४ स्थिति प्रवर्त्त संयम सरग या
विधि होत नृपाल। गुण व्यतिकर अरु मायया जानिय परम
कृपाल २७५ निर्गुण तहां निमित्तवत पुरुषर्षभ नहिंरक्त। प्रसत
विश्व यह लोहवत जामें व्यक्ताव्यक्त २७६ भगवंत न्यारो रहत
है गुण प्रवाह सों तात। करत अकर्त्ता हनत है सदा अहंता
भात २७७ अव्ययातकर कालसों पुरुष अनादि अनंत। जनत
जनन करि जनन सों धारि निमित्त हंनत २७८ अस्य विपक्ष
स्वपक्ष नहिं रहस मृत्युमहान। पीछेधावत भूतगण कर्म विवश
गुणवान २७९ काला कालहु मृत्यु द्वै जन्तु हेतुहैं जौन। दोनों
सों विभु रहितहै स्वस्थ कहावै तौन २८०. कोउ कर्म इनको
कहत कोऊ कहत स्वभाव। एक कालपर देव इक कोउ काम
कहिगाव २८१ अप्रमेय अव्यक्त जो नाना शक्ति जनेत। तात
चिकीर्षित तासुकी को जानै बुधि नेत २८२ तव भ्राता हंतार
नहिं धनदानुग ये जौन। पुरुष विसर्गादान में कारण दै वहि
तौन २८३ सृजति हंति सोई जगत अवंति विगत अभिमान।
गुण कर्मनमें लिप्त नहिं अहमिति धरतकदान २८४ भूतात्मा
भूतेश जन भावन प्राणि न सोइ। शक्ति मायया युक्त निज
सृजति पाल हरजोइ २८५ मृत्यु अमृत वपुदेव जो शरण जाहु

अर्थ तितिक्षाकहिये सबदुःखों कासहैलेना यथाह सहनंसर्वदुःखानां तितिक्षासानिगद्यते २७२ नाकहिये पुरुष २७३ अंग हेध्रुव व्यवायं कहिये मैथुन २७४

तिहि तात । जिनहिं देत बलि बिश्व सृज जिमि पशु यंत्रित गात २८६ तजि निजभावै पंचसम सुनि सपत्न्यमा बैन । बन गत तपसाराध्य हरि लह त्रिलोकपर ऐन २८७ ताते क्रोधहि त्यागिये क्रोध पापकर मूल । बुधताके बश जातनहिं जो शिव हरकर शूल २८८ हेलन कीन्ह धनेशकर पुण्यजनन बधकीन्ह। हनो भ्रात इन जानियह अमित क्रोध उर लीन्ह २८९ कीजिय तिनहिं प्रसन्न सुत नम्र बचन कहि आस्य । ध्रुव सोंवन्दित सर्षि मनु गये पौत्र अनुशास्य २९० लखिनिवृत्त रणसोध्रुवहिं सगण धनेश्वर तत्र । किन्नर चारण यक्षनहु संगगये ध्रुवयत्र २९१ हम प्रसन्न भो क्षत्रिसुत कहो कुबेर सुनाइ । त्यागो दुस्त्यज बैरतुम बचन पितामह पाइ २९२ नहिंतुम यक्षन को बधो नहिं भ्राता तव यक्ष । प्राणिन जनु अप्यय प्रभू काल सदा प्रत्यक्ष २९३ हम तुम अहै अपार्थ धी पुरुषको अज्ञान । दुख बंधन जा बुद्धि सों होत स्वप्नवत भान २९४ जाइय ध्रुव कल्याण तव भजहु सदा भगवान । भूतात्मा भूतेशप्रभु भवछेदक सुख दान २९५ राज राज पुनिकहत भे माँगिय बरजो चाह। अचल भक्ति हरिपद कमल माँगी ध्रुवनरनाह २९६ दीन्हि इड़बिड़ा सुतहरषि पुनिभे अंतर्द्धान । ध्रुवहर्षित बरपाइकै किय निज पुरहि पयान २९७ बहुत दक्षिणा देइकै बहुतयज्ञ ध्रुवकीन । तीव्रभक्ति धारत भये भूतन हरिलखिलीन २९८ शील युक्त ब्रह्मण्यनृप धर्मसेतु गोसार । प्रजासकल मानत भये पिता पुहुमि सुखकार २९९ हायनछत्तिस सहसनृप करत भये क्षिति भोग। पुण्य क्षीण कियभोगकरि नाशेपापअभोग ३०० माया निर्मित बिश्वगुणि यथा नगर गंधर्ब । दीन्ह नृपासन पुत्रकहँ जानि स्वप्नवत सर्ब ३०१ सुहृद आत्मस्त्री सुत कटक कोशसुभूमि बिहार। आसमुद्र क्षिति कालबश गुनि बिशाल पगुधार ३०२ धारि यमादिक मंज्जि जल बद्धासन जितश्वास। स्थूल रूपभगवत बिषे कीन्हों ध्यान प्रकास ३०३ भूले ध्याता ध्येय पुनि समाधि

स्थभूपाल। बहुरि समाधिहुके विषे स्थूलहु त्यागोहाल ३०४ बा-
ढ़ो भक्ति प्रवाहहरि आनँद विह्वलहोइ। द्रयोहृदय पुलकांग पुनि
मुक्तलिंगभे सोइ ३०५ पुनि ध्रुव नभ देखतभये आवअनूप बि-
मान। उदित भयो द्विजराज जनु दशदिशि दीधित तान ३०६
छन्दरामगीतिका। तत्रपार्षद युग्मश्याम किशोर शुभ भुजचा-
रि। अरुण अंबुज नयन अंशुक हार कुंडलधारि॥ गदा करधरि
चारु अंगद क्रीट मुकुट ललाम। जानि उत्तम गायकिंकर उठि
सुकीन्ह प्रणाम ३०७ नामभगवत प्रेम संयुत करतभे ध्रुवगान।
देखि अंजलि बद्धकंधर नम्रहरि जनजान॥ नन्द अपर सुनन्द
दोनों बचन कहिबे लीन। जौन पंचम बर्ष तपसा तत देवहि
कीन ३०८ अहो भूपति होइ तव शिव सुनहु ममवच एह। विष्णु
आयसु लेन आये तत्पदहि युत नेह॥ ऋषिनको जो प्राप्त
नाहीं लखत जीतो सोइ। बैठिये चन्द्रादि जहँ पर्यंत दक्षिण
जोइ ३०९ दो०। पितृ तुम्हारे नहिंगये और गयो नहिं कोइ।
जगत बंधमें चलि वंसिय विष्णु परमपद जोइ ३१० यह जो
प्रवर बिमान है विष्णु पठाव सनेह। तामहँ बैठिय आइकै आ-
युष्मन गुण गेह ३११ सुनि बैकुण्ठ नियोज्यबर बचन मंधुच्यु
त तत्र। करि मज्जन हरि प्रिय बहुरि कियप्रणाम मुनियत्र ३१२
पूजन करि धिष्ण्याग्र्यको नौमि पार्षद न काहिं। सुबरण मय
देखत भये बैठनचह मनमाहिं ३१३ तबलगिआये मृत्युतहँ करि
प्रणाम कहबैन। मामंगी कुरु नृपति बर सुनिकह ध्रुवगुण ऐन
३१४ भलकीन्हों आये इतै कहि सुमिरो हरितौन। मृत्यु मूर्ध्नि
पदधारिचढ़ि यानकरत भे गौन ३१५ तब दुंदुभि बाजे घने पण-
वमृदङ्ग अपार। गावत भे गंधर्बबर बहरि पुष्प झरिकार ३१६
मातु सुनीतिहि सुमिरियो जबहिं चले स्वर्लोक। जात त्रिविष्टप
काहँ हम त्यागि मातु भुवओक ३१७ इतिव्यवसित व्यवसीय
तिन कह पार्षद गुणभौन। मातु तुम्हारी अग्र वह क्रियोयानचढ़ि
गौन ३१८ पूजित पथिवैमानिकन पुष्प बृष्टि लखितत्र। लांघि

त्रिलोकी मुनिन अपि गेपर ध्रुवपद यत्र ३१६ शुद्ध श्रांत प्राणिन सुखद सम दृशजावेंतत्र । अच्युत प्रिय साक्षातजे अच्युत पदहै यत्र ३२० इमि सुत ध्रुव उत्तान पद कृष्ण परायणजौन । चूड़ामणि इव अमलभो तीनोंलोकनतौन ३२१ घोर वेग जिहि चक्रको ज्योतिष भ्रमत अपार । ध्रुवमधि मेढ़ीवतयथा वृषकण मर्दन कार ३२२ छन्दरामगीतिका । चरित यश उद्दाम ध्रुवको संत संमत जौन । धन्ययश अरु आयुपुण्यद स्वस्त्ययन गुणभौन ॥ स्वर्ग्य ध्रौव्यप्रशस्यनाशक पाप सुखकरसोइ । सुनहिं श्रद्धा सहित अच्युतप्रिय सुचेष्टितजोइ ३२३ होत भगवत भक्तिजासों क्लेश संक्षयहोइ । चहतजौन महत्व तेजहु मानहूलह सोइ ॥ प्रयत कीर्तन करंत प्रातहि सभामें जोजाइ । चरित हरिध्रुव सांझहू जे कहत आनँद पाइ ३२४ श्रवण द्वादशि सिनीवाली पौर्णमासीं काहँ । दिनक्षय व्यतिपात संक्रम अर्कहू दिनमाहँ ॥ सुनत श्रद्धा सहित भगवत यशासुनावत जौनाकामनानरहीनपावत सिद्धि आतम तौन ३२५ दो० । या बिधि श्रीध्रुवको चरित बर्णन कीन्हों सोई । अर्भक क्रीड़ा छांड़िकैविष्णुशरण गे जोइ ३२६ ॥

अथ जटायुकी कथा ॥

चौ० । कथा जटायूकी शुभएहा । बर्णन करौं कछुक युत नेहा ॥ प्रगट कथा रामायण माहीं । ताते अधिक कहत मैं नाहीं ३२७ जबहिं राम बनबाससिधाये । कांचन मृग बिलोकिसुखपाये ॥ लषण राखि सिय रक्षा हेता । तापीछे गे कृपानिकेता ३२८ ताकि रघुपति तीक्षण शरमारा । हा लक्ष्मणकहि उच्चपुकारा ॥ श्रवण शब्द सीता के आई । राम भीर गुणि लषण पठाई ३२९ तब रावण आयो थलतेही । करिछल हरत भयोबैदेही ॥ लै बिमान नभपंथ उड़ाना । सीता ब्याकुल भई महाना ३३० हा रघुनाथ लषण बलवाना । यह बाणी जटायु

सुनि काना ॥ आइ समीप सियहि पहिचाना। रावणं सों किय समर महाना ३३१ चोंचन पंजन घायल कीन्हा। व्यथित गिराइ यानसों दीन्हा ॥ सीतहि जाइ सुथलबैठारा। लरन हेत पुनि भयो तयारा ३३२ रावण काहँ बिकल अति कीन्हा। जिहि रावण जग बश करि लीन्हा ॥ तब रावण करि क्रोध निदाना। काटे पंख कठोर कृपाना ३३३ पक्षी पक्षहीन भो जबहीं। थाको सकल पराक्रम तबहीं ॥ क्षत अनेक बहुरौ तन कयऊ। लै सीतहि रावण चलि भयऊ ३३४ ढूंढ़त राम लषण तहँ आये। व्याकुल गृद्धदेखि तहँपाये ॥ जबहीं गृद्ध राम कहँ देखा। सबदुख तत्क्षण हरे बिशेखा ३३५ वाह्याभ्यंतर हरि छबि छाई। शत्रु मित्र गति गईभुँलाई ॥ कहि वृत्तांत बिदा असु मांगी। सुनत राम अतिआनंद पागी ३३६ गृद्धहि लियोगोद निज लाई। हस्त कमल फेरो सुखदाई ॥ वारिज नयन नयन भरि बारी। तातन धूरि जटा निज झारी ३३७ राखहु प्राण न त्यागिय देहा। करिहौं अचल बिगत सन्देहा ॥ तबहिं गृद्ध कहबचन रसाला। सुनिये देवन देव कृपाला ३३८ मो समधन्य कौन जग अजू। निज अंकम लीन्हों रघुराजू ॥ जो स्वरूप शिव अति श्रम पावा। सो मेरेसमीप चलि आवा ३३९ राखौं तन अनित्य किहि हेता। अस कहि राम चरण चित देता ॥ तन तजि दिब्य रूपधरि लयऊ। हाथ जोरिअस्तुति प्रभु कयऊ ३४० चाढ़ि बिमान बैकुण्ठहि गयऊ। ताकी क्रिया करन प्रभु लयऊ ॥ जियालाल ऐसे प्रभुत्यागी। भजहिं अन्य ते परम अभागी ३४१ ॥

मातुलभानजेकी कथा ॥

दो०। मातुल भैने युगल अति भे भगवत के दास। किय प्रसन्न भगवत सुखद निजसेवा परकास ३४२ तजिघर भगवत शरणहो तीरथयात्रा हेत। चले बिपिन मधि देखियो भगवत

मूर्ति सचेत ३४३ मन्दिरहीन बिलोकिकै मनमें करी बिचार। कतहुँ द्रव्य जो पावहीं रचहिं भवन सुखसार ३४४ घूमनलागे उर्वरा श्रीहित दोनोंतौन। सुनो कहूंहैपारसी प्रतिमासेवड़भौन ३४५ दोऊहरषे अवनिहि मन्दिर श्रीपतिकेर। जान उचितय-द्यपि नहीं तदपि करी नहिंदेर ३४६ चौ०। भगवत शरणशरीर बिलोकी। हरि प्रसन्न हित करिय बिशोकी ॥ नरकादिक भय लागो जिनके। शरणागत दृढ़ता नहिं तिनके ३४७ गयेसे-वड़ो मन्दिर माहीं। तत्क्षण शिष्य भये तिनपाहीं ॥ ऐसीसेवा चितदै कीन्हा। बश्य सेवड़नको करिलीन्हा ३४८ ते प्रसन्न अति भे मनमाहीं। कारबार सौंपो तिन काहीं ॥ मन्दिर सबअप-नेवश देखा। मूर्ति लेन चितदियों बिशेखा ३४९ द्वारबन्दमारग नहिंपायो। चिन्ता करन बहुरि मनलायो ॥ गुम्मज कलश पेंच युतजाना। कलश अलग निशि कीन्ह निदाना ३५० गुम्मज चढ़ो भानजाजाई। मामादियो मूर्ति लटकाई॥ मूर्तिभानजादृढ़ करिपायो।मामहु चढ़नातिही मग लायो ३५१ हर्षसमेत पीन अति भयऊ। निकरि न सको तत्र फँसि गयऊ ॥ कीन्ह उपाय निकरि नहिंपायो। तबनिज भैनेसों समुझायो ३५२ कारजबनोन कछु सन्देहा। मन्दिर रचहुजाइ युतनेहा ॥ तुमअब आनँद सहितसि-धारौ। ममशिरकाटि यहाँपर डारौ ३५३ नाहिंतद्वैहै शोच अमा-ना। निन्दा साधुपरै जो काना॥ साधु भेषवास्तव हरिरूपा। जग जीवन सुखदेत अनूपा३५४ सुनतभानजा दुखितअपारा। मामू कहो कियो तिहिं बारा। शीशकाटि मूरति लैसोई॥ ब्याकुलजात भयो अतिरोई ३५५ यद्यपि ज्ञान वान रहसोई। सत्संगति बिछोह दुख होई॥ कबहूँशोक मग्नहोजावै। कबहुं मूर्ति लखि आनँद पावै ३५६ भवन रचन जहँ करीबिचारा। दूरिहिते तहँजाइ नि-हारा॥ कोउकरत मन्दिर उद्योगा। देखत अधिक भयो मनशोगा ३५७ जाइसमीप बहोरि निहारा। यहतौ मामूखड़ो हमारा॥ दोऊधाइ परस्पर भेंटे। दीरघ दुसह बिछोह कि मेटे ३५८ मन्दिर

रंगनाथ बनवावा। सत्रजगमें अद्वैत सुहावा॥ ऐसे भगवतभक्त सुहाये। तनधन भगवत हेतलगाये ३५९ जियालाल तू किमि भ्रमसाना। देखत सुनत करत नहिं काना॥ सेमर आश शुका जिमि लावै। पाके तूल अपर नहिं पावै ३६० छन्द माधवी। धन धामतिया सुत मातु पिता मनजानत हौ परिवार सगा। जबहंस पयान करै नहिं आवहिं काम न देवहिं संग पगा॥ भवसागर घोर अथाह महा यमदूत कराल कराल मगा॥ जियलाल भजो हरिहाल नहीं अबहोन चहै दिन एक दगा॥ ३६१ छन्दमनहरण। दिन दिन छिन छिन क्षीण होत आयु बलजानत बढ़त मूढ़हरि बिसरायो है। अंजलि के जल सम जरठ केवलसम अस्त गतसूरजके तेजसम गायो है॥ सलिल बबूल सम तरु सरिकूलसम छीलर कबंध सम थिरता न पायोहै। चालनीके चूरण समान बै घटत जात जियालाल ताहूपै न चेत चित आयोहै ३६२॥

राघवानन्दजी की कथा॥

दो०। संप्रदाय रामानुजै भये राघवानन्द। परमभक्त भगवत सुखद हरिजन आनँद कन्द ३६३ चारौ आश्रम चहु बरण दीन्हे भक्ति लगाइ। बसत रहे जिहि देश में प्रगटीभक्ति महाइ ३६४ रामानन्दहि लेतभे अंतक आस्य बचाइ। बर्षसत शत अर्द्ध शत दीन्ही आयु बढ़ाइ ३६५ ऐसे चरित अनेकहैं महिमा अमित अपार। जियालाल हरिजन चरित तारणतरि भवधार ३६६॥

जगन्नाथकी कथा॥

दो०। रामदास सुत बिप्रवर जगन्नाथ जिन नाम। धर्मभक्ति की सीमभे भगवत जन सुख धाम ३६७ सारासार बिचारि कै गहेहंस गुण जौन। नवधा भक्तिहि धारियो सुनिन भांति रहतौन ३६८ पुरुषोत्तम गुरुकी कृपा धरी कवच निजअंग। कटुक बचन इषुनाविधैं नाइषु विधैं कुसंग ३६९॥

लक्ष्मणभट्ट की कथा॥

दो०। शरणागत मारग बिषे लक्ष्मण भट्टमहान। दशप्रकार की भक्ति मन हरिजन सेवा ध्यान ३७० संसारी कारज बिषे मनस्वप्नहू न जात। हरि कीर्त्तन अद्वैत मे हरिसों राखो नात ३७१॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकविंशशरणागतआत्म निवेदनमहिमानिष्ठायांदशभक्तकथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौत्रयोविंशस्तरङ्गः २३॥

छन्दरामगीतिका॥ रामपदअरबिन्दरेखा मुकुटसुन्दर नौमि। दण्डवत अवतार ध्रुवको करहुँधारोसौमि॥ निष्ठयहद्वाविंश सुंदर कथा भक्त सुपाँत्र। जियालाल द्विजेन्द्र वर्णन करत पावन साँच१ दोहा॥ सखाभाव महिमा शुभग कोकवि पावैपार। यानिष्ठाजे भक्तहैं मित्रभावहरिधार २ चौ०॥ यामेंकछूहैनसन्देहा। ब्रह्मजीव कर सहज सनेहा॥ वेदपुराण विदितयहबाता। तातेसत्य मित्र करनाता ३ सूक्ष्मजीव बृहतहैईशा। एतोभेदजीवजगदीशा॥ बारिधिनीर यथा घटआनै। दोऊ जलअन्तर किमिमानै४ जिमि दीपैकएक शिखिभारी। अन्तरका बिधि कहिय बिचारी॥ दोनों सों अतिप्रीति सदाई। एतो अन्तर परै लखाई ५ माया वित्रश भूलि प्रभुगयऊ। तबतेयह संसारी भयऊ॥ मर्कट यूययथाबन माहीं। गहैबधिक जिमि हरिशिशुकाहीं६बंधनकरिदेवै सुखभारी। नाच नचावै रूपसवाँरी॥ वहनटहीको प्रभुकरि जानत। आप निजातिहियेनहिं आनत ७ तिमि मायाबश जीवभुलाना। भगवत मित्रबचन नहिंमाना॥ निगमागम पुराण मतनाना। सोइमित्र हरिकीन्ह बखाना ८ ताको सुनै गुनै नहिंभाई। माया हीमेंरहासमाई॥ दूजेहरिहिं बँधोहरि देखी। जिमि लुकात नट पास बिशेखी ९ जबलगि मित्रपास नहिंजावै। सखाभाव रसका

बिधिपावैं ॥ ब्रह्मजीव सो बड़ो कहावै । तातेप्रथम जीव तहँ जावै १० जैसे नृपति मित्रहै कोई । तासुसमीप जातजन सोई ॥ कबहूँ नृपहु तासु घर जावै । पूर्णमनोरथ तिहिकरिआवै ११ ताहूको संगहिलैजावै । याको भवन नृपहि किमिभावै ॥ अति आनँद ताकेउरहोई । निजघर सुख जानत लघुसोई १२ ईश्वर निकट दूरनहिंसोई । माया असत सत्य नहिं होई ॥ आपुहि बँधो न बाँधो माया । केवल भरम जीवहित गाया १३ चोंगलि शाख शुकागहिजैसे । उलटेटँगै महाभ्रमतैसे ॥ कोउनबाँध बँधोहैनाहीं । भ्रमकेवल मिथ्या जनकाहीं १४ जबहरि मित्र समीप सिधावै । लहिआनँद सब भरम नशावै ॥ परममित्र भगवत को जानै । तिनसों नई प्रीति नित ठानै १५ खानपान संगहि नित कीजैं । शुभग बस्तु दीजिय अरुलीजै ॥ अन्तर नेकहु राखिय नाहीं । क्रोध नकरिय कबहुं मनमाहीं १६ दो० । हँसै हँसावै संगही बैठै सोवै संग । चलै सवारी संगसजि हर्ष सहित निज अंग १७ या बिधि नित साधनकरै सखाभाव मन लाइ । अवशिमित्र भगवत मिलैं भव दुख जाइ नशाइ १८ यानिष्ठामें भक्तजे बरणों तिनके नाम । मित्रानँद जिन पायऊ भगवत शोभा धाम १९ ॥

अर्जुन की कथा ॥

दो० । श्रीअर्जुन महराजको सखाभाव सुखदान । कासोंवर्ण नहोइगो को कबि अस मतिमान २० सखाभाव अवलोकिकै जिनके श्रीयदुराइ । दूत स्वारथी आदिमे मित्रभाव सरसाइ २१ खानपान बैठन उठन लीला हँसन बिहार । मिलिबो कहिबो मित्रबिधि तिनको अति बिस्तार २२ ब्यासादिक मुनि कहतभे भारतादिमें तौन । दई सुभद्रा ब्याहिकै मित्रनेहसों जौन २३ चौ० । जिन प्रताप अर्जुन बलवाना । योधा द्वितिय जगत नहिं जाना ॥ जिन बल हरिबिन अग्नि चराये । भारत जलधि पैरितः पाये २४ किय प्रसन्न शंकर रणमाहीं । अर्द्धासन बैठे

हरिपाहीं ॥ बासी जलधि असुर बहु मारे। सुनासीर जिन हेत
दुखारे२५साठिहजार अपर भटमानी। शतमन्युहिते अति दुख-
दानी॥ अर्जुन तिनकर कीन निपाता। हर्षित भये विड़ौजा
गाता २६ उत्तर दिशि अति बिकट महाना। जीति नृपन बश
किय बलवाना॥ नीलध्वज हंसध्वजजीते। सुरथ सुधन्वा किये
अतीते २७ नृपति मयूरध्वज बशकीन्हे। चन्द्रहास्य मिलि आ-
नँद लीन्हे॥ स्वसुतबभ्रुवाहनसों रारी। कीन्ही अर्जुन समर
प्रचारी २८ बभ्रुवाह अर्जुन शिरकाटा। सेना सकल शीश पुनि
छांटा॥ चित्रांगदा उलूपी देखी। कीन्हों तहां बिलाप बिशेखी
२९ माता रुदन करत लखिपायो। अर्जुनसुत पाताल सिधायो
नागन बधि जीवन मणि लीन्हा। समरभूमि आगम द्रुति
कीन्हा ३० शीश जोरि सब सुभट जिआये। प्रद्युम्नादि उठे सुख
पाये॥ मंत्री शेष सुवन रणआई। अर्जुनशिर लैगयो चुराई
३१ तादिन कृष्ण तहां चलिआये। चक्र पठाइ शीश मँग-
वाये॥ धारिहिये मणि शीश लगावा। कृष्णहि लखि अर्जु-
नसुखपावा ३२ जिनके दश बिधि नाम सुहाये। धेनुरोग ना-
शक सुख छाये॥ अर्जुन अपर फाल्गुन नामा। जिष्णु कि-
रीटी पुनि सुखधामा ३३ श्वेत बाहबीभत्सु सुहाये। पारथ
बिजय नामछबि पाये॥ सब्यसाचि जिनकोहै नामा। नामधनं-
जय अपरललामा ३४ इन नामनको अर्थअपारा। भारत ब्या-
स कीन्ह बिस्तारा॥ श्री अर्जुन कर सुयश अपारा। को कबि
बरणि लहै जो पारा ३५ कृष्णहि पलक ओट नहिंटारा। जब
बिछोह तब सुरति निहारा॥ खान पान संगहि सँगसोये। बात
परस्पर कह तनगोये। ३६ भगवत कियनिज धामपयाना। यह
वृत्तान्त किरीटी जाना॥ बधिर मूक उन्मत्तसमाना। कीन्हह-
स्तिनापुरहि पयाना ३७ राज्य परीक्षित को तहँदीन्हा। आपु
गमन बन्धुनयुतकीन्हा॥ जाइ हिमालयमें तनुत्यागी। कृष्ण
समीप गये बड़भागी ३८॥

अथ सुदामाजी की कथा ॥

दो०। कथासुदामाकी सुखद विदित पुराणन एह। बहुत सुदामा चरितहू बरणे कविन सनेह ३९ ताते कछु संक्षेपही बरणिकहौं मैं अत्र। पढ़त रहे श्रीकृष्ण जब भईमिताई तत्र ४०. चौ०। पढ़ि निज भवन कृष्ण जब आये। भवन सुदामहू स्व सिधाये॥ रहेसुदामादारिदछाये। कबहुँ अन्नभरिपेट नखाये ४१ तनपर बस्त्र न दुर्बल गाता। नारिएकदिनकह हरषाता॥ यह अचरज की बात महाना। जासु मित्रश्रीपति भगवाना४२ महाराज श्रीकृष्ण कृपाला। दुखी देखि अतिहोत दयाला॥ सो अति दीनदरिद्री कैसे। जाइय शरण कहाइत वैसे ४३ कहो सुदामा सुनिये नारी। लिखा जौन तकदीर हमारी॥ सो कोऊ नहिं मेटनहारा। मातुसुशीला बचनहमारा ४४ कहो सुशीला सुनियेस्वामी। नारायण प्रभु अन्तर्यामी॥ दुखनाशन गुण भासन हारे। केशी कंस अघासुरमारे ४५ मातु पिताजनरक्षन वारे। जातकरहिं दुख दूरितुम्हारे॥ ताते अवशि जाइये स्वामी। ब्रह्मादिक जिन करहिं नमामी ४६ कहो सुदामा सुनिये नारी। टरैनजोप्रारब्धहमारी॥ पश्चिमउदयसूर्य्यचहहोई। चलैमेरुशीतल शिखिसोई ४७ शशाशीश जामैंचहशृंगा। बिधि अक्षरमेटैको अंगा॥ कहो सुशीला सुनिये स्वामी। अहैं कृष्ण प्रभु अन्तर्यामी ४८ जात कृपा तुम ऊपर करिहैं। दारिद सकल बिलोकत हरि हैं॥ जो प्रभुरजको करत पहारा। करतपहार पलक में छारा ४९ कोटिन अण्ड रोम जिन केरे। तिनमें ब्रह्मा बसत घनेरे॥ ब्रह्माक्षर मेटैं प्रभुसोई। यामैं कछु सन्देह नहोई ५० कहो सुदामा सुनिये प्यारी। नीति बचन अस कहत विचारी॥ असमय मित्र भवन नहिंजैयै। गये बहुरिपीछे पछितैये ५१ सुनत सुशीला बचन बखाना। मित्रधर्म नीके मैं जाना॥ देत लेत शंका जिन नाहीं। प्रीति प्रतीति सदाउर मा-

हीं ५२ ताते जाहु अवशि इहि बारा। करिहैं दारिद दूरितुम्हारा। कहो सुदामा सुनहु प्रवीना। ब्राह्मण सदा चाहिये दीना ५३ इन्द्री प्रबल होइँ धनपाई। देइँ ज्ञान बिज्ञान नशाई॥ मन करि मत्त मानमद धारै। बरजोरी कुत्सित मग डारै ५४ कहो सुशीला सुनिये नाथा। बारबार नावों पद माथा॥ करि व्यापार जौन धनहोई। होत ममत्व प्रगटतहँ सोई ५५ अकस्मात पावै धन कोई। तहाँ ममत्व प्रगट नहिंहोई॥ हरि प्रसाद गुनि कीजिय भोगा। दारिय सकल चित्त के शोगा ५६ जाहु अवशि अबदेर न कीजै। लक्ष्मीपति सुमिरण मन दीजै॥ तण्डुलकणा माँगि पुनि लाई। दीन्हे भेंट हेत यदुराई ५७ पठवत ठेलि सुदामा जाना। नारि स्वभाव ओछसति माना॥ लागे मन में करन बिचारा। हमदरिद्रि वें धनी अपारा ५८ मित्र भाव निबहैंगो कैसे। पुनि बिचार आई मनऐसे। मिलिहैं अवशि कृष्ण सुख पाई। कृपासिंधु श्रीयादवराई ५९ उमँगो प्रेम मिलन तिहि काला। दरशन हेत चले ततकाला॥ चलत मार्ग पहुँचे इक ग्रामा। निशा जानि कीन्हों बिश्रामा ६० मित्रागमन जानि भगवाना। मिलन प्रेम अति बढ़ो महाना॥ निशामाहँ प्रभुलीन्ह बुलाई। द्वारावती निकट यदुराई ६१ प्रातहि चले सुदामा जबहीं। सुन्दर नगर लखो तिन तबहीं॥ पूँछत भये कौन यह ग्रामा। लोगन कह द्वारावति नामा ६२ सुनत हर्ष मन भयो अपारा। प्रात कर्म कीन्हे तिहि बारा॥ पुनि पूँछत पूँछत तहँ आये। जहाँ कृष्णके महल सुहाये ६३ द्वारस्थित पाहँ कहो सुखपाई। कृष्ण समीप जाहिं हम भाई। कहत हमारो नाम सुदामा। मित्र हमार कृष्ण सुख धामा ६४ द्वारपाल सुनि हरि ढिग आयो। शीश नाइ अस बचन सुनायो॥ ब्राह्मण एक द्वारपर आयो। फटे वस्त्र नाँगेपग धायो ६५ अतिहि दरिद्री है तनछीना। आपुहि मिलन चहत सुखभीना॥ नाम सुदामा करत बखाना। सुनतहि नाम कृष्ण भगवाना ६६ प्रेमातुर धाये

सुधि त्यागी। चरण लगाये हिय अनुरागी॥ मिले दोउजन पुनि लपि टाई। कांपे प्रेम कहो सो जाई ६७ रंगमहल कर गहि लै आये। दिव्य पलंग सानँद बैठाये॥ कुशल प्रश्न पूछत यदुराई। पूजन साज रुक्मिणी लाई ६८ रुक्मिणि कृष्ण लगे पगधोवन। देखि दशा लागे पुनि रोवन॥ भये बिमाइन सों बेहाला। लखे पगन में कंटक जाला ६९ हाय सखा अतिही दुख पाये। आव इतन कित दिवस बिताये॥ दशा सुदाम कि दीन बिलोकी। करुणामय हरिभये सशोकी ७० जल परात लिय हाथन जोई। नैनन जल धोये पगसोई॥ पीताम्बर सों पोछन लीन्हा। विधि समेत पूजा पुनि कीन्हा ७१ बैठेसुख आसनसों जबहीं। पूँछत भये कृष्ण पुनि तबहीं॥ कछु भांभी हमरे हित दीन्हा। आपुहि चहत काह वंह लीन्हा ७२ सदा करत रह तुम चतुराई। आजहु तैसीही मन आई॥ चावल कांख छिपावन लागे। सो देखत हरि आनँद पागे ७३ इत हरिकरत लेन की घाता। उत चोरतद्विज लज्जित गाता॥ जीरण बस्त्र फटो तिहिकाला। बिथुर गये तण्डुल तहँ हाला ७४ भगवत लखि मूठी भरि लीन्हा। स्वाद सहित चर्बण पुनि कीन्हा॥ मूठी द्वितिय लेन जबचाहा। रुक्मिणि पकरिलीन्ह झटबांहा ७५ चित बिचार रुक्मिणि यह कीन्हा। मुष्टिक चाबि लोक द्वै दीन्हा॥ द्वितिय चाबि देहैं अब काहा। अथवा यह बिचार मन माहा ७६ मोकहँ देहिं न अबकी बारा। अथवा यह मनकीन्ह बिचारा॥ अति कोमल भगवत सुकुमारा। कोमल मधुरकरत आहारा ७७ स्वल्पाहार करत हरिसांचे। अवगुण करहिं न तण्डुल काचे॥ अथवा यह बिचार मनकीन्हां। हरिचावल आपुहि चबि लीन्हा ७८ मधुर मित्र घर के अति जोई। लेहैं हरि चबाइ सब सोई॥ या हित पकरी रुक्मिणि बांहा। सिद्ध रसोइ सेवकन काहा ७९ मित्र समेत गये जिवनारा। भोजन करत भये तिहि बारा॥ सात दिवस तहँ रहे सुदामा। अति सेवा किय

हरिसुख धामा ८० बिदा माँगि पुनि भवन सिधाये। बड़ी दूरि
पठवन हरि आये। घूमत भये बहुरियदुराई। कर न द्रव्य दीन्ही
सुखदाई ८१छंदचले सुदामा जबहीं। या बिधि बचन कहे मन
तबहीं॥ बन बन घूमे धेनुचराई। काहभयो प्रभुता अब पाई ८२
दो०।घटतकाश हमरे दिये जे भूपन शिरताज। कपट पहुनई
करतभे करत न आई लाज ८३ जानिपरो सेवा निरखि देल-
दाइधन साथ। गरजे बहुबरषे न घन रहेशिखी धुनि माथ ८४
मुख पसारि सीपी रही चातृकगई न प्यास। स्वाति बुन्द नहिं
गरजि दिय तिमि निष्फल ममआस ८५ यह बिचारि धन
दीन्ह नहिं करी कृपा भगवान। निष्किंचन धन पाइकै होइ
विवश अज्ञान ८६ मृषानहीं यह सत्यहै मैं मानों उपकार।
धनी पुरुष तमघोर बश पातक करत अपार ८७ दोष पंचदश
अर्थ में बासकरत सब काल। कल्याणार्थी त्यागई दूरहि ते गुनि
हाल ८८ स्तेयानृत हिंसा ब्यसन कामक्रोध मदलोभ। भेद-
स्मय अरु बैरहू अविश्वास गतशोभ ८९ संस्पर्द्धा अरु दंभहू
मोह सहित ये जौन। बरिआई वश करत हैं ज्ञानभगावत तौन
९० जगतारण वारण सुखद हरण शमन भवत्रास। कृपाकरी
नहिं धनदियो ममउर भयो प्रकास ९१ चौ०। याबिधि करत
तर्क मन माहीं। भगवत कृपा जानि निज पाहीं॥ नि-
जपुरके समीप चलि आये। शोभा अमितपुरी लखि पाये ९२
द्वारकाहु ते शोभा भारी। मणिमय मन्दिर अति उजियारी॥
लागे कलशाकाशसुहाये। भासवंत निज भासलजाये ९३
शोभा बरणि पारकिन पाये। विश्वकर्म निज हाथ बनाये॥
चकृत भये सुदामा देखी। काहूसों इमि कहो बिशेखी ९४ का-
कीपुरी नाम इहि काहा। सो बोलतभो सहित उछाहा॥ पुरी
आपही की यह सोहत। देखत चित्त जनन को मोहत ९५
पुरी सुदामा याको नामा। शोभित अंति बिचित्र बहु धामा॥
या बिधि करत बतकही देखी। आये सेवक अमित बिशेखी ९६

आदर युत महलन लै आये। देखि सुशीला आनँद पाये॥ धाइ परी पति चरणन आई। आनँद अश्रु प्रवाह बहाई ९७ धोये चरण बहुरि सुखपाई। बैठारा शुभ पलँग लयाई॥ दांत पुरट सामग्री जामें। दुग्ध फेनसम शय्या तामें ९८ व्यंगित बचन कहे भगवानै। ताको कीन्हों शोच निदानै॥ कीन्हे नाना भोग अपारा। पर नहिं भगवत भजन बिसारा ९९ दो०। नहिं भूले धनपाइ कै सुमिरे चित भगवान। हरि दीन्ही यह जानउर नहिं आपनि पहिंचान १०० कथा सुदामा की सुखद जियालाल है एह। सोई मैं बर्णनकियो दायक हरिपदनेह १०१॥

अथ ब्रजके ग्वालबालोंकी कथा॥

चौ०। अमित सखाहैं यदुपतिकेरे। पारलहै को बरणिघनेरे॥ ॥ वासखास गोलोक सुदेशा॥ हरिसंग क्रीड़ाकरत हमेशा १०२ कछुक नाम तिनकहौं बखानी। परम मित्र अति शारंगपानी॥ श्रीदामा मधुमंगल नामा। सुबल सुबाहुभोज ब्रजधामा १०३ अर्जुन मंडलहू सुखछाये। सखा आठ ये मुख्य कहाये॥ रहत समीपकाल सबसोई। नायक सकल सखन केसोई १०४ औरौ सखा मुख्य छबिखानी। नामकलुकके कहौं बखानी॥ रक्तकपत्रक पत्रीनामा। मधुग्रीव मधुब्रत्त ललामा १०५ प्रेम कंदमकरंदकहाये। अपर बिशाल रसाल सुहाये॥ आनँद चन्द्रहास्य सुखधामा। पयद वकुल रसदान ललामा १०६ शारद बुद्धिअपर सुखधामा। कोटिन सखा गनै को नामा॥ कोटिनहैं तिनकेर चरित्रा। बरणिपार को लहै पवित्रा १०७ भगवत जबहिं लेतअवतारा॥ तब संगहि आवत सुखसारा। जबहिंकृष्णलीन्हों अवतारा। वृन्दाबन पवित्र पगुधारा १०८ ग्वालबाल सब संगहि आये। कीन्हे नाना चरित सुहाये॥ जावैं धेनुचरावन जबहीं। रचैं खेल नानाबिधि तबहीं १०९ बैठैंकबहूँ जाइ तरुछाहीं। कृष्ण समेत महानँद माहीं॥ सखा गोद सोवत हरि कबहीं। बीजन

अपर डुलावत तबहीं ११० कोऊ चापत चरण सुहाये। जे अज शंकर ध्यान न आये॥ कबहूंनृपति बनैंभगवाना। भारवाहहों सखा निदाना १११ कबहूं सखानृपति बनिजावें। शिबिकामें भगवतहि लगावैं॥ कोऊ बेत्रपाणिबनिजावें। कोऊबन्दीसुयशसुनावै ११२ कोऊगानकरनतहँ लागें। कोऊहास्य प्रगटि सुखपागै॥ नानाभांति कुतूहल करहीं। आनँद उँमगि उँमगि हियभरहीं ११३ कबहूँ नृपति रूप भगवाना। सभा मध्यबैठैं सुखदाना॥ कोऊ मंत्रीबनै गुवाला। हाथ जोरि कह बचन रसाला ११४ कोऊ सेवक बनि सुखपावैं। समयसमय सेवा मनलावैं॥ कोऊ चामर बीजनलीन्हे। सादर नृप सेवा चित दीन्हे ११५ धारण छत्रशीश इक कयऊ। पान करण्ड कोऊकर लयऊ॥ पात्रलिये निष्ठीवन कोई। दर्पणलै सन्मुख इकहोई ११६ बेत्रपाणिहै के इक आवै। भली भांति सबकोबैठावै॥ द्वारपाल होवैइकआई। सभाकोउ बिनपूछिनजाई ११७ मागध सूतबन्दि हुवकोई। बर्णत सुयश नृपति कोसोई॥ हासक अपर बिदूषक बनते। नानाभांति बचनते भनते ११८ करत गान गायकहोआना। वाद्य बजावकोउ विधिनाना॥ कोऊपण्डित बनितहँआवैं। ज्योतिष शोधिलग्नठहरावैं ११९ कोऊ बहुबिधि रूपबनावैं। नृपहि प्रसन्नकरै धनपावैं॥ याबिधि नाना चरित सुहाये। भांति अनेक पुराणन गाये १२० जब अक्रूर हरि हि लै गयऊ। मथुराजाइ मल्ल बध कयऊ॥ बहुरि अखारे सखन बुलाई। मल्ल युद्ध कीन्हों यदुराई १२१ कबहूं सखा भूमि लै आवैं। कबहुँ सखन कहँ आपु भ्रमावैं॥ आकर्षणोपसर्पण आदी। ग्वालन सह किय पुरुष अनादी १२२ दो०। ग्वालचरित्त यहिबिधि अमित जियालाल सुखसार। मैं अति संक्षेपहि कहो ग्रंथन बहु बिस्तार १२३॥

चौ०। गोबिंद स्वामी कथासुहाई। मैं बरणौं रघुबर शिर नाई॥ सखा भाव भगवत में भारी। तिनसों सक न क्षणक

मनहारी १२४ कीन्ही ऐसी प्रीति अपारा। शीघ्रहि पहुँचे नित्य बिहारा॥ खेलत गोली रह इकबारा। गोविंद स्वामी नन्दकुमारा १२५ इनको दावँ आव तहँ जबहीं। मन्दिर भाजि घुसे हरि तबहीं॥ गोविंद स्वामी जबलखि पायो। नट नागरके पीछे धायो १२६ गोली जाइ मूर्त्ति में मारी। देखत क्रोधित भयेपुजारी॥ ठेलि भवन सों दीन निकारी। बाहर जाइ दीन बहु गारी १२७ अब तो बैठ भवन में जाई। निकरि मिलिहि कबहूं तो आई॥ तब करिहौं अति शिष्टाचारी। यह कहि बैठ क्रोध जिय धारी १२८ छन्द मनहरण। कीन्ही चिंताभारी महाराज नन्दलाल तबै बैठेहैं सक्रोध यह मेरीही तलासमें। काननविहार विन खेले सखा संगविन मोसों रहोजात नाहीं चित्त है बिलास में॥ बाहर जो जाउँगो न जानै यह करैकहा कीन्हों न अशन हरिशोक के प्रकासमें। परम भक्त बिठ्ठल नाथ जीसों कहो हरि इत गोविन्द स्वामी काहँ निजबासमें १२९ दो०। हम भजिआये दाउँलै ताते कीन्हों क्रोध। भोजन मैंनहिं करि सकौं जबलगि तासु न बोध १३० भोग लगायो मम चहिय तो समुझावो ताहि। क्रोध शांत ताकोकरिय मम आनँद उर चाहि १३१ चौ०। बिठ्ठलनाथ सुनत तहँ आये। बिनयप्रार्थना करिसमुझाये॥ लाव मनाइ हाथगहि तहँवां। श्रीनँद नन्दन शोभित जहँवां १३२ पठै दीन मन्दिर में ताहीं। दोनों मिले डारि गल बाही॥ दोनों मित्रानँद में पागे। दोउ परस्पर अति अनुरागे १३३ तब भोजन कीन्हों गिरिधारी। सखाभावकी प्रीति पियारी॥ श्रीगोविन्द स्वामि इकदीना। गये बाह्य शंकाहि प्रवीना १३४ बैठे जबहिं तबहिं नँदलाला। दूरिहिते अति रूप बिशाला॥ मारनलगे अर्क फल लैकै। औरो अमित चपलता कैकै १३५ गोविंद स्वामि क्रोध अति कीन्हा। क्रोधित अर्क फली कर लीन्हा॥ ऐसी मारत भे इकबारा। ब्याकुल भे श्री नन्दकुमारा १३६ भागन

को मन कियो उपाई । गोबिंद स्वामि मातु तहँ आई ॥ ढूँढ़त रहि घर गई लवाई । तहँई सो रुकि गई लराई १३७ एक समय हरि मन्दिर माहीं । थार पुजार भोग लिय जाहीं ॥ बैठ रहे मग गोबिंद स्वामी । भोग थार दीजै कह आमी १३८ भोजन हम करि लेवैं जबहीं । दीजौ नंदनंदन कहँ तबहीं ॥ सुनत पुजारी सोनहिं दीन्हा । गोबिंद स्वामि छीनि तब लीन्हा १३९ खायो सामग्री सब थाला । पुनि चलि भे आनंद बिशाला ॥ देखि क्रोध अति कीन्ह पुजारी । कहागोसाईं पास पुकारी १४० आव बाज ऐसी सिवकाई । गोबिंद स्वामी करत ढिठाई ॥ छीनि भोग सामा सब लीन्हा । बैठि निडर भोजन तिन कीन्हा १४१ पूंछतभे गोसाईं बुलाई । ऐसी तू क्यों करत ढिठाई ॥ गोबिंद स्वामि कहन सुनि लीना । अपने लाला कहँ प्रति दीना १४२ तुम शुचि भोजन देत कराई । आगे सजि पहुँचत बन जाई ॥ खेलन फिरन लड़न के हेता । तुम उद्यत करिदेत सचेता १४३ हम पीछे भोजन को पावत । ढूँढ़त फिरहिं ताहि बन धावत ॥ श्रमित भ्रमित घूमत ढूंढ़त नित । आजु बिचार कियो तातें चित १४४ पहिलेही किन रहौं तयारा । सुनि गोसाईं बचन सुख सारा ॥ हँसि पुजार सो कहो बखानी । सखा भाव उर अंतरजानी १४५ हरि प्रसन्न इन के सुख पाये । अकथ चरित्र बेद जन गाये ॥ भगवत देत भक्त को माना । अंगीकृत अपनो अपमाना १४६ मन प्रसन्न इन कर जिमि होई । करियो अशाशि धारि चित सोई ॥ सुनि पुजारिउर आनँद माना । गोबिंद स्वामि कथा इमि गाना १४७

चौ० । गंगग्वाल कीं कथा सुहाई । मैं बरणौं रघुराहि मनाई ॥ शिष्य रहे ब्रजनाथ सुहाये । सखा भाव भगवत मन लाये १४८ क्रीड़ानन्द मग्न सब काला । खेलत सदा संग गोपाला ॥ बृजकी भूमि प्राण सम मानत । प्रीति अमित हरि चरितम आनत १४९ गांधर्व विद्या जो गाना । तामें भे अद्भुत निदाना ॥

बादशाह आयो इक काला। सुनत भयो तिन गान रसाला १५०
हरिचरित्र सुनि मोहित भयऊ। सभा समेत परम सुख लयऊ॥
बोलत भयो जोरि युग हाथा। चलिये आपु हमारे साथा १५१
गंगग्वाल सुनि बचन सुनावैं। तजि ब्रजभूमि अनत नहिं
जावैं॥ बादशाह या बिधि सुनि पायो। दण्ड बाँधि हस्तीपुर
लायो १५२ नृप हरिदास श्रवण सुनि पायो। तो दर राजपूत
तहँ आयो॥ बादशाह सों बिनती करिकै। तिनहिं छुड़ावत
भो सुद मरिकै १५३ हर्ष सहित ब्रज में चलि आये। मित्र
बिलोकि परम सुख पाये॥ इमि भगवत जन चरित महाना।
जियालाल संक्षेप बखाना १५४॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकं जियालालजन्माग्रेणविरचिते
चतुर्विंशातिनिष्ठामध्येद्वाविंशसखाभावमहिमानिष्ठायांपंचभक्त
कथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौचतुर्विंशस्तरङ्गः॥ २४॥

चौ०। निष्ठ त्रिविंश शुभग अब गावों। श्रीरघुवर पद शीश
नवावों॥ जामें है महिमा शृंगारा। अरु माधुर्य महात्म्य
अपारा १ कथा बीश भक्तन की गाई। या निष्ठा में सुखद म-
हाई॥ रेख त्रिकोण कमल पद रामा। बन्दि करहुँ कृष्णहि पर
नामा २ जिन गोकुल में धरि अवतारा। कीन्ह पवित्र चरित्र
अपारा॥ जिनहिं सुमिरि सुनि करिकै गाना। उत्तम गती लहत
नर नाना ३ जो यह रस शृंगार सुहायो। उज्वल शुक्लहु नाम
कहायो॥ ज्ञान बिराग भक्ति सब जेते। याके दास रूप हैं तेते ४
रंकहि नृपति करै क्षण माहीं। नृपहि रंक क्षण संशय नाहीं॥
पूरण प्रेम क्षणहि प्रगटावै। शूल ताप दुख दूरि बहावै ५ मोहन
गुण नहिं सम शृंगारा। मंत्र तंत्र रागादि अपारा॥ बीते बीतत
बीतहिं जोई। बांछित पद यासों लह सोई ६ जन शृंगार उपा-
सक जोई। ब्रह्मानन्द गुणत सुख सोई॥ मधुर रूप भगवत
उर आवै। मग्नानँद तन दशा भुलावै ७ तृण समान त्रयलो-
कहि जानै। भगवत रूप झलक उर आनै॥ या निष्ठा बिस्तार

महाना। जियालाल संक्षेप बखाना ८ सो०। भगवंत सुन्दर श्याम नव यौवन सुखमा सदन। पूर्ण ब्रह्म सुख धाम जियालाल भव भय हरण ९ दो०। या निष्ठा जे भक्त भे बरणौं तिन के नाम। झलक पलक टारी नहीं भगवत सुन्दर श्याम १० छन्दमनहरण। गोपी यूथ पुण्य गात हित नँद जात प्रात यमुना नहात तात मात त्यागो नात है। मुकुट लटक अँग मटक चटक छवि खटक अटक मन वश भयो गात है॥ जियालाल काल ज्ञान हेत जल हाथ लियो ताही क्षण शोभा इहि भांति सरसात है। धन प्रतिबिम्बजल कर प्रतिबिम्ब दृग कंकण दृगन कर तिलक सोहातहै ११॥

ब्रज गोपियों की कथा॥

चौ०। गोपी जूह चरित्र सुहाये। लोकत्रय पवित्र सुखछाये॥ महिमा तीर्थाधिक्य सुहाई। जिन पदरेणु शीश बिधि लाई १२ परम प्रिया भगवत की सोई। भगवत रूप जानिये जोई॥ गोपी चरित समुद्र महाना। नाना भाँति पुराण बखाना १३ हौंहू कछुक चरित कहि गावों। जासु कृपा निर्मल गति पावों॥ एक समय श्रीकृष्ण मुरारी। गे इक गोपी भवन सिधारी १४ प्रातहि उठि चलिबे मन लीन्हा। पायँ घूँघुरू चिन्ता कीन्हा॥ परिहै जागि शब्द सुनि कोई। पगसो लगे उतारन सोई १५ तबहीं कर गहि बोली प्यारी। सुनिय नाथ यह बिनयहमारी॥ मम उपहास होइ तौ होई। पर यह होन रावरी सोई १६ पूर्ण ब्रह्म श्रीहरिहैं जोई। अलगावत पगलगे कसोई॥ एक समय ब्रजगोप कुमारी। माखन बेचन काह सिधारी १७ जान चहत यमुना के पारा। तबताईं ब्रजचन्द निहारा॥ जिनके दरश हेतमन लागा। अनुक्षण प्रीति बढ़त अनुरागा। १८ दो०। हँसन बोलिबे हेत चित लागो जिनकी ओर। नटनागर महगंज ढिग गई जहां चित चोर १९ करि झगरा दधि दान

को और सबाद अपार। करतभईं इच्छा बहुरि जैबे यमुनापार २०
ब्रज किशोर महराज ने कहहै यमुना नाव। है न मलाहो या
समय पार कौन बिधि जाव २१ आवश्यक जानो चहिय तौ
हमकरिहैं पार। चढ़ींनाव गोपी सुनत लखि मलाह सुखसार २२
चौ०। जीरण रहै तरीवह जोई। पहुँची मध्यधार जब सोई॥
आवन बारि लगो तिहि माहीं। हरि कौतुकी कहोतिन पाहीं
२३ बूड़न नाव चहत अब एहा। यामें कछू नहीं सन्देहा॥ह-
रिस्वभाव गोपी जो जाना। तिन याबिधिसों बचन बखाना २४
डूबन देहु शंक कछु नाहीं। धमकावत जानत हम आहीं॥
जे नवयोवन हैं तहँ कोई। अरु अज्ञात यौवना सोई २५ नँद-
नन्दन स्वभाव नहिं जाना। नइ आईं न भलें पहिचाना॥
सुनत श्यामसुन्दर की बानी। कोऊ धाइ कंठ लपटानी॥ २६
कोउलगी छाती सों धाई। करगहि लीन्ह कोउ यदुराई॥ च-
रण पकरि बैठीतहँ कोई। भगवत पुनि बिचार किय सोई २७
सिद्ध मनोरथ बहुसोभयऊ। बहुतै रहींनभय कछुकयऊ। नौका
मग्न कछुक करि दीन्हा। डूबीतरी सबन यह चीन्हा २८ गोप
कुमार कूल जेठाढ़े। ताली देइँ हँसे मुद बाढ़े॥ ये गोपी मूरुख
चढ़ि नावा। कृष्ण भरोसे किये बनावा २९ गोपिन भयो शोच
नहिं नेका। बोलीं बचन धारि दृढ़ टेका॥ गोरस माखन बहि
किन जावै। प्राण जाइँ यहदेह नशावै ३० शोचनतासु शोच
है एका। कहिहैं जन उर जासु बिबेका॥ भव सागर तारक है
जोई। डूबिनाव सेवक रहसोई ३१ यशुमति बांधे कुवँर
कन्हाई। देखन हित गोपी सबधाई॥ बोलत भईं सकल मुसु-
काई। भली भई यहबात कन्हाई ३२ यशुदामातु भलोयह
कीन्हों। बंधन जो तुमरो करिदीन्हों॥ अबतौ जनिहौ बरुया-
राती। बंधन पीर होतया भांती ३३ गूढ़ बचन ब्रजबधू सुनावा।
जीव मुक्त करिये यह भावा॥ जब उद्धव मथुरासों आये। हरि
सँदेश गोपिन हित लाये ३४ ज्ञान बिराग सुनावन लयऊ।

तिनहिं निरुत्तर गोपिन कयऊ॥ वश संयोग भ्रमर इकआयो। तिहि गोपीगण देखन पायो ३५ करिषड़ंघ्रि मिसउद्धव पाहीं। बोलत भईं भ्रमर सों ताहीं॥ तूताकी अति करत बड़ाई। निर्दय कपटी जौन कहाई ३६ राज्य लई राजाबलि केरी। कपट धूर्त्तई करि बहुतेरी॥ रामरूप सूर्पणखा देखा। बिकल भई लखि रूप बिशेखा ३७ निज बश अरु अशक्त करिरामा। बहुरिकुरूप करत भे बामा॥ अतिबेशील छलीहै जोई। अंतर्यामि कहत किमि कोई ३८ जो वह सतिहै अंतर्यामी। अंतर दशा देख किन आमी॥ आवत क्यों न समीप हमारे। दुःख दशामदया क्रिनधारे ३९ कै अन्तर्यामी वह नाहीं। कै निर्दय बेशील सदाहीं॥ ऐसे कोटिन चरितसुहाये। ब्रजसुन्दरी पुराणनगाये ४० गोपिन काहँ बिरह युतदेखी। उद्धवमन भइ दयाबिशेखी॥ व्याकुल भये चित्तमें भारी। भगवत की निर्दया निहारी ४१ यह चरित्र देखो तिहि काला। गोपिन सँगदेखे गोपाला॥ काहू संग हँसत यदुराई। काहूकी दधि लेत चुराई ४२ गऊवत्स कहुँ बांधत धाई। गऊदुहत कहुँ आनँद पाई॥ कहूँ सखा निजटेरि बुलावैं। कहुँ बंशी बजाइ सुखपावैं ४३ गऊ चराये बनसों आवत। गोपिन बंशी शब्द बुलावत॥ गोपीनिकरि द्वारपर आई। मन चितलागो कुवँरकन्हाई ४४ उद्धव लखि आश्चर्य भुलाने। बे सुधि भये न यह कछु जाने॥ गोपी उद्धव कहँ समुझावत। तूउद्धव किहि ज्ञान सिखावत ४५ कौन प्रयोजन है इतज्ञाना। तूक्यों लखि यह चरित्त भुलाना॥ गोपिन संग सदा हरिआहीं। कबहुं ब्रजसों अलग नजाहीं ४६ दो०। गोपी चरित अपार है सुकवि न पावतपार। जियालाल किमि कहिसकै अति मतिमन्द गवाँर ४७॥

मीरांबाई की कथा॥

श्रीगोपीजन भक्तिसमाना। मीराबाई भक्तिबखाना॥ निर्भय

भक्ति अशङ्क सुहाई। भगवत में पूरण चित लाई ४८ कुलकी परम्परा तजि दीन्ही। गिरिधर लाल माहँ रति कीन्ही॥ निर्मल यश जिन भक्त नगायो। बरणौं तिन को चरित सुहा-यो ४९ कारण प्रीति होन कर एहा। गिरिधर लाल मूर्ति रह गेहा॥ कतहुँ बरात ग्राममें आई। देखनधाये लोग लुगाई ५० इनकी मातु महल चलि आई। गिरिधर लाल जहाँ सुख दाई॥ मीराहू पीछे चलिआई। चार बर्ष की वयस सुहाई ५१ माता सों पूछन यह लागी। हमरो दूलह कौन सभागी॥ सुनि हँसि लीन्ह गोद बैठारी। गिरिधर लाल कि ओर निहारी ५२ कहत भई तब पति है एहा। मीरा सुनत बढ़ायो नेहा॥ घुंघुट वाही त्तण करिलीन्हा। पूर्ण प्रीति ताक्षण सों कीन्हा ५३ पल नहिं कल बिन दर्शन कीन्हे। स्वामी माहँ चित्त अति दीन्हे॥ कछु दिन गये पिता अरु माता। कियं बिवाह चलि आइबरा-ता ५४ नृप चित्तौर सुवन सुख दाई। तासोंकीन्ही तासु सगा-ई॥ राना सुत संग भ्रामरिहोई। गिरिधर लाल जान यह सोई ५५ मातु पिता किय बिदा तयारी। मीरा जानि कियो दुखभारी॥ गिरिधर लाल बियोग कराला। सहिन सकी मीरा तिहि का-ला ५६ दो०। सोरोये बेसुधि भई मातु पिता लखि एह। जो चाहौ सो लीजिये कहत भये युत नेह ५७ छन्दमनहरण। सुनत बचन मीरा कहत बिकल अति हमहिं जियाइबेकेहेतयह कीजिये। तनमन धन लाइ सेवा मैं करौंगी मातु गिरिधरलाल जीको हमहिं दे दीजिये॥ इन बिन जीवन हमारो नहिंहोइ मा-तु कोटिन उपाय करिकीर किन छीजिये। मातु पिता दुखित बिलोकि हियलाइलीन्हों कहोयुत प्यार गिरिधर लाल लीजि-ये ५८ दो०। गिरिधर लालहि पाइकै मीराअति सुख पाइ। निज डोला बैठायकै प्रभु छबि निरखत जाइ ५९ प्राणप्रियको पाइकै उपजो सुख कह कौन। प्रभु छबि देखत छकित चख पहुँची राना भौन ६० सासु उतारी पालकी रीति भांति करि अत्र।